04 - पंचायतः ग्राम्य जीवन के सच के कई पहलू छूटे

05 - सुब्रमण्यम और उनके भावयुक्त चित्रों का संसार

A Daily News Magazine

भोपाल

रविवार, 29 जून, 2025

06 - ट्रांसफॉर्मर के खुले डिस्ट्रीब्यूशन बॉक्स बन सकते है हादसों...

07 - फ़िल्मी परिवारों में 'रोशन' की अहमियत

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 290, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailÐcom

facebookÐcom/subahsaverenews

wwwÐsubahsavereÐnews

twitterÐcom/subahsaverenews

तुम्हारे शहर का मौसम बड़ा सुहाना लगे...

राजसमन्द की एक शाम

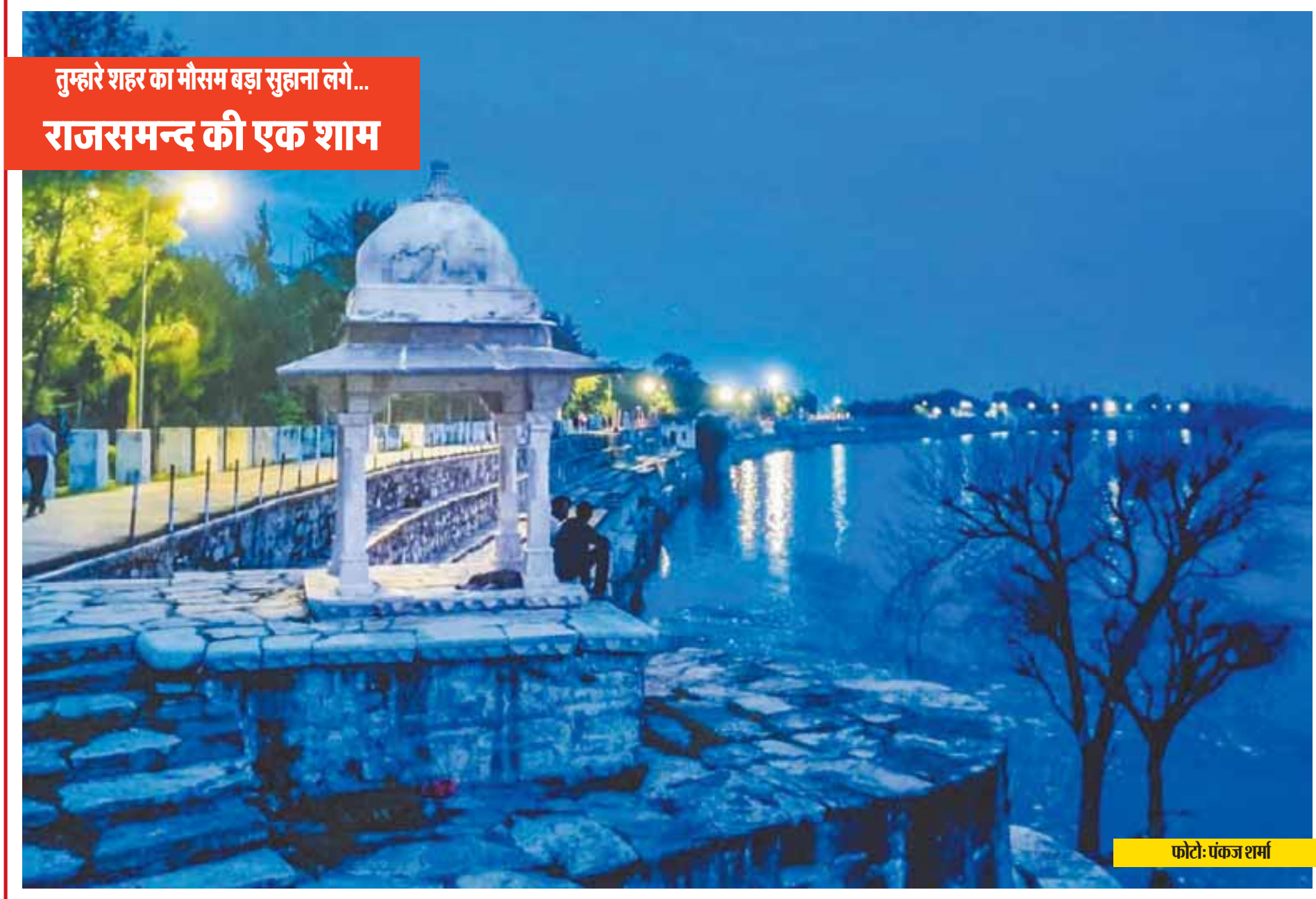

फोटोः पंकज शर्मा

जैन मुनि आचार्य विद्यानंद महाराज का जन्म शताब्दी समारोह

● पीएम मोदी ने डाक टिकट, सिक्के जारी किए; कहा-आचार्य विद्यानंद का जीवन त्याग की मिसाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीएम मोदी शनिवार को जैन मुनि आचार्य विद्यानंद महाराज के जन्म शताब्दी समारोह में शामिल हुए। इस दौरान उन्होंने आचार्य विद्यानंद का डाक टिकट और सिक्का जारी किया। इस कार्यक्रम का आयोजन भगवान महावीर अहिंसा भारती ट्रस्ट की ओर से किया गया। ट्रस्ट ने पीएम को धर्म चक्रवर्ती की उपाधि से सम्मानित किया। इस मौके पर मोदी ने कहा, मैं खुद को इस उपाधि के योग्य नहीं मानता, लेकिन हमारी संस्कृति में यह परंपरा है कि संतों से जो भी मिलता है, हम उसे प्रसाद मानकर स्वीकार करते हैं। इस वजह से मैं इस सम्मान को प्रसाद रूप में विनम्रता से स्वीकार करता हूं और इसे मां भारती को समर्पित करता हूं। पीएम ने कहा-आज का दिन इसलिए भी खास है क्योंकि 28 जून 1987 को आचार्य विद्यानंद मुनिराज को 'आचार्य' की उपाधि दी गई थी। यह सिर्फ एक सम्मान नहीं था, बल्कि जैन संस्कृति को विचारों,

संयम और करुणा से जोड़ने वाली एक पवित्र धारा भी थी। जब हम आज उनके जन्म के 100 साल मना रहे हैं, तो वह ऐतिहासिक पल फिर याद आता है। आचार्य विद्यानंद महाराज का जन्म शताब्दी समारोह पूरे साल भर चलेगा।

इस दौरान जैन समाज की ओर से देशभर में जगह-जगह कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। पीएम ने भावुक होते हुए कहा कि आचार्य विद्यानंद जी मुनिराज एक 'युग पुरुष' थे, 'युग दृष्टा' थे। मुझे सौभाग्य मिला कि मैं उन्हें निकट से देख पाया और उनके आध्यात्मिक तेज को महसूस कर सका। आज जब हम उनकी जन्म शताब्दी मना रहे हैं, तो मुझे इस मंच से भी उनका स्नेह और निकटता महसूस हो रही है। पीएम ने कहा-भारत दुनिया की सबसे प्राचीन और जीवित संस्कृति है। हम हजारों वर्षों से अमर हैं, क्योंकि हमारे विचार अमर हैं, हमारी सोच अमर है, हमारा दर्शन अमर है।

सुप्रभात

सुनो लड़कियों
तुम्हारी पलकों पर जो चुप्पियाँ हैं,
वे केवल मौन नहीं
वे पीढ़ियों की परछाइयां हैं
उन्हें किसी उजले मेले में
नीलाम कर आओ।

प्रेम को ओढ़ लो
जैसे भोर की पहली धूप
न शर्त, न अनुमति,
बस उतनी सहजता से प्रेम करो
जितनी सहज है सांस लेना।

हर उस नायिका को
नया नाम दो
जिसने ÷ना÷ कहा या विद्रोह किया
और दुनिया ने उसे
बुरी औरत ठहरा दिया

देह का अधिकार
बाहर से नहीं, भीतर से आता है
यह देह
विवाह, कुल या वंश की जागीर नहीं
यह उस आत्मा की है
जो इसमें निवास करती है

अमलतास और गुलमोहर को
पाठशाला की दहलीज़ पर रोप दो
जहां बेटियां
न केवल झुकना
बल्कि उठना भी सीखें

इतिहास के पन्नों से
धूल झाड़ो
रज़िया सुल्तान को
केवल ÷इकलौती महिला शासक÷ कहने की बजाय
उसे उस सिंहासन पर बैठाओ
जहां शासक केवल लिंग नहीं
बल बुद्धि से पहचाने जाते हैं

प्रेम की गणना मत करो
कि कितनों से किया
यह देखो
क्या कभी स्वयं से भी किया?

हर स्त्री के हृदय में
एक नन्ही-सी चिंगारी रख दो
जो समय आने पर
सिर्फ़ आग न बने
बल्कि पूरा दृश्य ही बदल दे

हाँ,
दुनिया इसे कहेगी
विद्रोह, उन्माद,
या कदमों का बहक जाना
पर तुम जान लो -
यह तुम्हारा सौंदर्यपूर्ण अधिकार है।

- अनुजीत इकबाल

जब संसद नियम से परे जाए तो न्यायिक हस्तक्षेप जरूरी

● *सीजेआई गवई बोले-लेकिन यह ज्यूडिशियल टेररिज्म न बने*

कहा-अधिकारों की रक्षा के लिए अदालतों की सक्रियता जरूरी

नागपुर (एजेंसी)। भारत के मुख्य न्यायाधीश बीआर गवई ने शुक्रवार को कहा कि संविधान और नागरिकों के अधिकारों को बनाए रखने के लिए न्यायिक सक्रियता जरूरी है। यह बनी रहेगी, लेकिन इसे न्यायिक आतंकवाद में नहीं बदला जा सकता। सीजेआई ने कहा कि भारतीय लोकतंत्र के तीनों अंगों विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका को उनकी सीमाएं दी गई हैं। तीनों को कानून के अनुसार काम करना होगा। जब संसद कानून या नियम से परे जाती है, तो न्यायपालिका हस्तक्षेप कर सकती है। सीजेआई गवई नागपुर जिला कोर्ट बार एसोसिएशन के कार्यक्रम में बोल रहे थे। यहां उन्होंने कुछ किस्से साझा किए। अपने माता-पिता के संघर्षों के बारे में बताया। अपने जीवन पर माता-पिता के प्रभाव के बारे में बात करते हुए भावुक हो गए।

न्यायिक आतंकवाद या ज्यूडिशियल टेररिज्म

यह कोई कानूनी शब्द नहीं है, और इसका इस्तेमाल करना न्यायपालिका का अपमान माना जाता है। जब कोई पक्ष मानता है कि अदालत निष्पक्ष नहीं है। या अदालत बार-बार ऐसे आदेश देती हो जो किसी खास राजनीतिक विचारधारा या समूह के खिलाफ लगते हैं। जब अदालत या न्यायिक संस्थान अपने निर्णयों या दखल से किसी पक्ष को ऐसा महसूस कराए कि उन्हें डराया, धमकाया या दबाया जा रहा है, तो कुछ लोग आलोचना में इस स्थिति को ज्यूडिशियल टेररिज्म कहा जाता है। जब मेरे नाम की सिफारिशजज के पद के लिए की गई, तो मेरे पिता बहुत खुश हुए।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर के समाज हित में किए गए कार्यों को भुलाया नहीं जा सकता: मुख्यमंत्री

डॉ. अम्बेडकर धाम के द्वितीय चरण का कार्य शीघ्र होगा प्रारंभ

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर द्वारा समाज हित में जो कार्य किए गए हैं उनका हम स्मरण करते हैं। उनके द्वारा किए गए कार्यों को कभी भुलाया नहीं जा सकता है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि ग्वालियर में बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर के नाम से स्मारक बनाने का पुनीत कार्य किया जा रहा है। इसके द्वितीय चरण के विकास कार्यों का भूमिपूजन शीघ्र होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शनिवार को ग्वालियर के जौरासी में निर्माणाधीन डॉ. भीमराव अम्बेडकर धाम का अवलोकन करते हुए यह बात कही।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर धाम के अवलोकन के अवसर पर कृषि मंत्री श्री एदल सिंह कंषाना, क्षेत्रीय सांसद श्री भारत सिंह कुशवाह, विधायक श्री मोहन सिंह राठौर, पूर्व मंत्री श्रीमती इमरती देवी सहित जनप्रतिनिधि एवं वरिष्ठ अधिकारी और नागरिक उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि ग्वालियर में निर्मित किए जा रहे बाबा अम्बेडकर धाम के द्वितीय चरण का निर्माण कार्य भी शीघ्र प्रारंभ किया जायेगा। मेरे साथ केन्द्रीय मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिंह तोमर, क्षेत्रीय सांसद श्री भारत सिंह कुशवाह सहित वरिष्ठजन भूमिपूजन करेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि केन्द्र एवं प्रदेश सरकार ने डॉ. भीमराव अम्बेडकर द्वारा समाज में किए गए कार्यों को सदैव याद किया है।

सूरत में आज होगा 'मप्र में निवेश के अवसर' पर इंटरएक्टिव सेशन

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव रविवार 29 जून को गुजरात प्रांत के सूरत स्थित होटल मैरियट में आयोजित 'मध्यप्रदेश में निवेश के अवसरों पर इंटरएक्टिव सेशन' में शामिल होंगे। यह आयोजन 'उद्योग एवं रोजगार वर्ष 2025' अभियान की श्रृंखला में बेंगलुरु के बाद दूसरा बड़ा संवाद होगा। इस अभियान का उद्देश्य क्षेत्रीय स्तर पर औद्योगिक समूहों से जुड़ाव बढ़ाना, रोजगार के अवसर सृजित करना और निवेश को सुगम बनाना। मुख्यमंत्री डॉ. यादव द्वारा राज्य के औद्योगिक विकास का दीर्घकालिक दृष्टिकोण, अधोसंरचना विस्तार और निवेशकों के लिए बनाए गए भरोसेमंद वातावरण को रेखांकित करेंगे। साथ ही उद्योगपतियों से वन-टू-वन मुलाकात करेंगे, जिसमें निवेश-विशेष साझेदारियों पर विस्तार से चर्चा की जाएगी। इंटरएक्टिव सेशन का मुख्य फोकस उन सेक्टरों पर रहेगा, जिनमें मध्यप्रदेश की प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त स्पष्ट रूप से सामने आती है। इसमें वस्त्र एवं परिधान, पेट्रोकेमिकल्स और रसायन, बल्क ड्रग्स, फार्मास्यूटिकल्स, जेम्स एंड ज्वेलरी, इंजीनियरिंग एवं संबद्ध निर्माण इकाइयां शामिल है। कार्यक्रम में मध्यप्रदेश की निवेश-उन्मुख परियोजनाओं का प्रदर्शन किया जाएगा। साथ ही प्रदेश की 18 नवीन सेक्टोरल नीतियों और औद्योगिक सहयोग के लिए उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी भी निवेशकों को दी जाएगी।

100 साल पुराने सिस्टम से किनारा करेगा रेलवे

● ट्रेन एक्सीडेंट कम करने और स्पीड बढ़ाने के लिए बनाया खास प्लान

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय रेलवे अपनी ट्रेन कंट्रोल सिस्टम को बेहतर बनाने जा रहा है। यह सिस्टम 100 साल से भी ज्यादा पुराना है। यह रेलवे नेटवर्क दुनिया में चौथे नंबर पर है। अब इसे आधुनिक बनाया जाएगा। इससे कामकाज और सुरक्षा बेहतर होगी। रेलवे बोर्ड एक नया प्लान बना रहा है। इससे संचालन और ट्रैफिक कंट्रोल के लिए टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल होगा। इससे दुर्घटनाएं कम होंगी। ट्रेनों की स्पीड बढ़ेगी। कामकाज

में तेजी आएगी। चूंकि आजकल रेलवे ट्रैफिक बहुत ज्यादा बढ़ गया है, इसलिए यह जरूरी है। एक बड़े अधिकारी ने बताया कि फ्रेट इंटेंसिव कॉरिडॉर्स, हाई स्पीड और मिक्स्ड ट्रैफिक पर ध्यान होगा।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 32 °c
न्यूनतम 25°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 29 जून 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

गुंडिचा मंदिर पहुंची भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा

● अब नौ दिनों तक अपनी मौसी के यहां ठहरेंगे भगवान ● दो दिन की रथ यात्रा में 10 लाख से ज्यादा भक्त पहुंचे

पुरी (एजेंसी)। ओडिशा के पुरी में सालाना जगन्नाथ यात्रा का शनिवार को दूसरा दिन रहा। सुबह 10 बजे फिर रथयात्रा शुरू हुई। भक्तों ने तीनों रथों को खींचना शुरू किया। सुबह 11.20 बजे भगवान बलभद्र का रथ तालध्वज और दोपहर 12.20 बजे देवी सुभद्रा का दर्पदलन रथ और इनके बाद भगवान जगन्नाथ का नंदीघोष रथ 1.11 बजे गुंडिचा मंदिर पहुंच गया है। मुख्य मंदिर से गुंडिचा मंदिर की दूरी 2.6 किमी दूर है। 8 लाख से ज्यादा श्रद्धालु होने की वजह से दो से तीन घंटे और लगे। गुंडिचा मंदिर में भगवान 9 दिन ठहरेंगे। पुरी में सुबह से हल्की बारिश हो रही है। इससे मौसम में अच्छा हो गया है। कल की अपेक्षा आज भीड़ 10-20 फीसदी कम रही, लेकिन आज भी कई लोग बीमार हो गए। पिछले दिन में 650 से श्रद्धालुओं के तबीयत खराब होने की खबर है। शुक्रवार को रथ यात्रा में 10 लाख से ज्यादा लोग थे। देर शाम देवी सुभद्रा के रथ के आसपास भीड़ का दबाव बढ़ने से 625 से श्रद्धालुओं की तबीयत बिगड़ गई। प्रशासन के

मुताबिक, 70 अस्पताल में भर्ती किया गया। इनमें से 9 की हालत गंभीर है। ओडिशा के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री मुकेश महालिंग ने कहा कि श्रद्धालुओं के बीमार होने का मुख्य कारण अत्यधिक गर्मी और उमस है। एक अधिकारी ने बताया कि पुरी के जिला मुख्यालय अस्पताल में करीब 70 लोगों का इलाज चल रहा है, जिनमें से नौ की हालत गंभीर बताई गई है। इस बीच, सूत्रों ने दावा किया कि बालागंडी क्षेत्र के पास कई लोग घायल हो गए, जहां भगवान बलभद्र का रथ, तलध्वज, एक घंटे से अधिक समय तक फंसा रहा। एक अधिकारी ने कहा, ''लंबे समय तक रथ के रुके रहने के कारण वहां भीड़ जमा हो गई, जिसके परिणामस्वरूप कई लोग फंस गए और भीड़भाड़ वाले क्षेत्र से बाहर निकलने की कोशिश करते समय घायल हो गए।'' पुरी जिला मजिस्ट्रेट सिद्धार्थ स्वैन ने बताया कि रथ यात्रा के सुचारू संचालन के लिए व्यापक तैयारियां की गई थीं। रथों को गुंडिचा मंदिर तक ले जाने के लिए सजाया गया था।

आईपीएस पराग जैन बने रॉ के नए प्रमुख

● 1 जुलाई से चार्ज संभालेंगे, दो साल का कार्यकाल रहेगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत सरकार ने 1989 बैच के पंजाब कैडर के आईपीएस पराग जैन को देश की खुफिया एजेंसी रिसर्च एंड एनालिसिस विंग (रॉ) का नया चीफ नियुक्त किया है। उनका कार्यकाल दो साल का होगा। वे रवि सिन्हा की जगह लेंगे, जो 30 जून को रिटायर हो रहे हैं। पराग लंबे से रॉ से जुड़े हैं। उन्होंने रॉ के पूर्व प्रमुख सामंत गोयल के साथ मिलकर काम किया है। वे पाकिस्तान डेस्क को संभाल रहे हैं। उन्होंने अनुच्छेद 370 को हटाने और बालाकोट एयरस्ट्राइक जैसे अहम मिशन पर काम किया है। पराग एविएशन रिसर्च सेंटर के प्रमुख भी हैं, जहां उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर के तहत

पाकिस्तान के आतंकी शिविरों की पहचान में अहम भूमिका निभाई थी। पराग जैन एसएसपी चंडीगढ़ और डीआईजी लुधियाना के पद पर भी रहे हैं। पंजाब में ड्यूटी के दौरान उन्होंने आतंकवाद विरोधी कई ऑपरेशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जैन ने कनाडा-श्रीलंका में भारत का प्रतिनिधित्व किया है। कनाडा में तैनाती के दौरान उन्होंने खालिस्तान समर्थक नेटवर्क उजागर किया था। 30 जून 2023 को छत्तीसगढ़ कैडर के सीनियर अधिकारी रवि सिन्हा को भारत की खुफिया एजेंसी रॉ (रिसर्च एंड एनालिसेस विंग) का नया चीफ नियुक्त किया गया था।

पटना में दो विशेष आर्थिक क्षेत्र स्थापित करने की तैयारी

अब बिहार में उद्योग को मिलेगा बढ़ावा, सरकार हुई ऐक्टिव

पटना (एजेंसी)। बिहार में बनने वाले दो विशेष आर्थिक क्षेत्रों (एसईजेड) में उन औद्योगिक इकाइयों को जगह मिलेगी जो निर्यात को ध्यान में रखकर अपने उत्पाद तैयार करेंगी। दोनों एसईजेड में आधारभूत संरचना विकसित करने के लिए बियाडा की तकनीकी समिति ने प्रशासनिक स्वीकृति के लिए 109 करोड़ और 116 करोड़ रुपये का प्राक्कलन बियाडा बोर्ड को भेजा है। पिछले साल जुलाई में बिहार के लिए दो एसईजेड को मंजूरी दी गई थी पिछले साल 31 जुलाई को वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने बिहार के लिए दो एसईजेड को अपनी मंजूरी दी थी। एक एसईजेड बक्सर के नवानगर और एक पश्चिम चंपारण के कुमार बाग में बनाया जाना है। कुमारबाग एसईजेड पिछले साल पांच नवंबर को अधिसूचित किया गया था। बक्सर के नवानगर विशेष आर्थिक क्षेत्र को 19 नवंबर को अधिसूचित किया गया था। दोनों एसईजेड को औद्योगिक क्षेत्र में जमीन उपलब्ध करा दी गई है। उद्योग विभाग ने एसईजेड के संचालन की पूरी व्यवस्था को समझा है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मूल विचार ही 'अपनापन' है

● भागवत बोले-हिंदू समाज को स्नेह सूत्र में बांधना संघ का लक्ष्य

26 अगस्त से शुरू होगा शताब्दी समारोह, शुरू हो गई है तैयारी

पुणे (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत ने शुक्रवार को कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मूल विचार अपनापन है। अगर आरएसएस को एक शब्द में बयान किया जाए तो वह 'अपनापन' होगा। भागवत बोले- संघ का उद्देश्य पूरे हिंदू समाज को अपनेपन और स्नेह के सूत्र में बांधना है। साथ ही, हिंदू समाज ने यह जिम्मेदारी भी ली है कि वह पूरी दुनिया को भी इसी अपनेपन के सूत्र में बांधे। संघ प्रमुख भागवत पुणे में आयुर्वेदाचार्य दिवंगत वैद्य पीवाय खडीवाले की जीवनी के विमोचन कार्यक्रम में बोल रहे थे। जानवरों के मुकाबले इंसान के पास बुद्धि होती है। अगर वह बुद्धि का सही

इस्तेमाल करे तो और बेहतर बन सकता है, लेकिन अगर उसी बुद्धि का गलत इस्तेमाल करे तो और भी बुरा बन सकता है। इंसान को बुराई से रोकने वाली एकमात्र चीज है अपनापन और स्नेह। 'गिविंग बैक' शब्द आज अंग्रेजी में फैशन बन गया है, लेकिन भारत में यह भावना बहुत पहले से है। भागवत ने कहा कि संघ यह सिखाता है कि अगर कोई आपके प्रति अपनापन दिखा रहा है, तो आपको भी वैसा ही स्नेह और करुणा दिखानी चाहिए। संघ क्या करता है। यह हिंदुओं को संगठित करता है। आत्मीयता की भावना को और मजबूत किया जाना चाहिए।

बीएचईएल को अडाणी पावर से मिला 6,500 करोड़ का ऑर्डर

मुंबई (एजेंसी)। भारत हैवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड यानी बीएचईएल को अडाणी पावर लिमिटेड से 6,500 करोड़ रुपए का ऑर्डर मिला है। बीएचईएल ने शुक्रवार (27 जून) को इस बात की जानकारी दी है। इस ऑर्डर के तहत बीएचईएल को छह थर्मल पावर यूनिट्स बनाने का काम मिला है, जिनमें से हर एक की कैपेसिटी 800 मेगावाट होगी। इस डील में बीएचईएल स्टीम टरबाइन जनरेटर और अन्य जरूरी डिवाइस सप्लाई करेगा। इसके अलावा कंपनी इन छह थर्मल यूनिट्स की स्थापना और शुरुआत की निगरानी भी करेगी। इस खबर से पहले आज बीएचईएल का शेयर 0.38 फीसदी की गिरावट के साथ 263.45 रुपए पर बंद हुआ। हालांकि, बीते पांच दिन में कंपनी का शेयर 4 फीसदी चढ़ा है। एक महीने में 2 फीसदी और छह महीने में 12 फीसदी चढ़ा है। वहीं एक साल में कंपनी का शेयर 11 फीसदी गिरा है। कंपनी का मार्केट कैप 91.90 हजार करोड़ रुपए है। निवेशकों को सलाह दी कि वे शेयर होल्ड करें।

कोलकाता गैंगरेप केस

दुष्कर्म की पुष्टि, शरीर पर काटने व खरोंच के निशान

कोलकाता (एजेंसी)। कोलकाता के लॉ कालेज में गैंगरेप की पीड़ित छात्रा की मेडिकल रिपोर्ट में रेप की पुष्टि हो गई है। मेडिकल जांच कलकत्ता नेशनल मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में की गई थी। कस्बा पुलिस के अधिकारी के मुताबिक पीड़ित के साथ जबरदस्ती करने, शरीर पर काटने और नाखून से खरोंचने के निशान मिले हैं। उससे मारपीट की भी पुष्टि हुई है। गैंगरेप केस के तीनों आरोपियों को कोर्ट ने शुक्रवार को 1 जुलाई तक पुलिस कस्टडी में भेज दिया है। पुलिस ने 26 जून को 2 आरोपियों और तीसरे आरोपी को शुक्रवार सुबह गिरफ्तार किया था।

बीजेपी हुई एक्टिव, 4 सदस्यीय जांच समिति का किया गठन- पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता के कलकत्ता लॉ कॉलेज में एक छात्रा के साथ सामूहिक दुष्कर्म का मामला तूल पकड़ता जा रहा है। इस मामले में जहां, पुलिस ने एक्शन लेते हुए तीन छात्र और एक सुरक्षा गार्ड समेत 4 लोगों को गिरफ्तार किया है, वहीं इसे लेकर अब सियासत भी तेज हो गई है। बीजेपी, ममता सरकार पर हमलावर हो गई है और कानून व्यवस्था पर सवाल उठाया है। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने प्रदेश की कानून व्यवस्था पर चिंता जताते हुए एक जांच समिति का गठन किया है।

सीएम ने दंदरौआ में आयुर्वेदिक कॉलेज बनाने की घोषणा

बोले- मेहगांव में आधुनिक स्टेडियम बनेगा; रतनगढ़ माता सिंचाई परियोजना पूरी होगी

भिंड (नप्र)। भिंड के दंदरौआ धाम पहुंचे सीएम डॉ मोहन यादव ने यहां पर आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज की स्थापना करने की घोषणा की। मेहगांव में युवाओं के लिए एक आधुनिक स्टेडियम बनेगा। गोहद से दंदरौआ धाम तक डबल रोड का निर्माण किया जाएगा। रतनगढ़ माता सिंचाई परियोजना पूरी होगी। भारौली को नगर पंचायत का दर्जा दिया जाएगा।

सीएम ने कहा दंदरौआ धाम एक अद्भुत एवं अलौकिक स्थान है। ऐसा स्थल मैंने आज तक न केवल देश में, बल्कि पूरे विश्व में कहीं और नहीं देखा।

मुख्यमंत्री ने श्रद्धालुओं को कहा कि यहां

स्वयं डॉ. हनुमान जी विराजमान हैं। उनकी कृपा मात्र से गंभीर से गंभीर रोग, जैसे कैंसर भी, केवल मंगलवार और शनिवार को दर्शन करने से ठीक हो जाते हैं। यह आस्था और श्रद्धा का चमत्कार है। जिस व्यक्ति की जितनी अधिक श्रद्धा और आस्था होगी, उसे उतनी ही जल्दी लाभ प्राप्त होगा।

उन्होंने चंबल अंचल की वीरता और बदलाव की सराहना करते हुए कहा, यह चंबल की धरती वीरों की धरती है, महावीरों की भूमि है। कभी डकैतों के कारण बदनाम रही यह भूमि, आज परिश्रमी किसानों और देश की रक्षा करने वाले जवानों की पहचान बन गई है।

सीएम बोले- मंदिर वहीं बनाया जहां कहा था

मुख्यमंत्री ने चंबल, बुंदेलखंड और ब्रज अंचल को भगवान श्रीकृष्ण की धरती है। उन्होंने कहा कि यह क्षेत्र धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सराहना करते हुए उन्होंने कहा, प्रधानमंत्री मोदी ने अयोध्या में राम मंदिर निर्माण कर करोड़ों हिंदुओं के सपने को साकार किया है। मंदिर वहीं बनाया गया, साथ ही न्यायालय के निर्णय का भी पूर्ण पालन किया गया। उन्होंने कांग्रेस पर तंज कसते हुए कहा कि, जो लोग पहले मंदिर बनने पर सवाल करते थे, अब कह रहे हैं कि वे भी चाहते थे मंदिर बने। यदि ऐसा है, तो अब मथुरा में भगवान श्रीकृष्ण के मंदिर निर्माण का संकल्प लिया गया है और भारतीय जनता पार्टी उसी दिशा में आगे बढ़ रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि चंबल अंचल के विकास के लिए सरकार पूरी तरह प्रतिबद्ध है। जब बात चंबल के विकास की होती है, तो प्रदेश सरकार का खजाना आपके लिए खुला हुआ है।

पीएम मोदी ने एस्ट्रोनॉट शुभांशु शुक्ला से की बात

● पीएमओ ने फोटो शेयर किया, 2 दिन पहले पहुंचे थे स्पेस स्टेशन

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को एक्सियम मिशन 4 पर गए भारतीय एस्ट्रोनॉट शुभांशु शुक्ला से वीडियो कॉल पर बातचीत की। प्राइम मिनिस्टर ऑफिस ने 5.49 पर इस बातचीत का वीडियो जारी किया। दोनों के बीच करीब 18 मिनट बातचीत हुई। प्रधानमंत्री मोदी ने शुभांशु शुक्ला से पूछा कि आप गाजर का हलवा लेकर इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन गए हैं। क्या आपने अपने

साथियों को खिलाया। इस पर शुभांशु ने कहा कि हां साथियों के साथ बैठकर खाया। भारतीय वायु सेना के ग्रुप कैप्टन शुभांशु दो दिन पहले 28 घंटे के सफर के बाद 26 जून की शाम 4.01 बजे इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन पहुंचे थे। वे 41 साल बाद स्पेस में जाने वाले भारतीय हैं। वे एक्सियम मिशन 4 के तहत 25 जून को दोपहर करीब 12 बजे सभी एस्ट्रोनॉट के साथ आईएसएस के लिए रवाना हुए थे। स्पेसएक्स के फाल्कन-9 रॉकेट से जुड़े ड्रैगन कैप्सूल में इन्होंने कैनेडी स्पेस सेंटर से उड़ान भरी। ये मिशन तकनीकी खराबी और मौसमी दिक्कतों के कारण 6 बार टला।

भारत ने लगाई समुद्री छलांग श्रीलंका के साथ की बड़ी डील

● डॉकयार्ड डील से चीनी घुसपैठ को मिलेगा करारा जवाब

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत की प्रमुख रक्षा क्षेत्र की सार्वजनिक कंपनी मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड ने श्रीलंका के सबसे बड़े शिपयार्ड, कोलंबो डॉकयार्ड पीएलसी (सीडीपीएलसी) में नियंत्रण हिस्सेदारी हासिल करने की घोषणा की है।

यह सौदा 52.96 मिलियन अमेरिकी डॉलर (लगभग 452 करोड़ रुपये) का है। यह भारत की किसी सरकारी रक्षा शिपयार्ड कंपनी द्वारा किया गया पहला अंतरराष्ट्रीय अधिग्रहण होगा और इसके जरिए भारत को हिंद महासागर क्षेत्र में एक 'रणनीतिक उपस्थिति' मिलेगी।

यह सौदा ऐसे समय में हुआ है जब चीन की सैन्य और आर्थिक घुसपैठ श्रीलंका सहित पूरे हिंद महासागर क्षेत्र में भारत के लिए चिंता का विषय बनी हुई है।

मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड भारत की सबसे बड़ी रक्षा शिपयार्ड कंपनी है। इसने कोलंबो डॉकयार्ड में कम से कम 51 फीसदी हिस्सेदारी हासिल करने के लिए समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। यह अधिग्रहण प्राथमिक पूंजी निवेश और द्वितीयक शेयर खरीद के संयोजन के माध्यम से किया जाएगा, जिसमें जापान की ओनोमिची डॉकयार्ड कंपनी लिमिटेड से शेयरों की खरीद शामिल है, जो वर्तमान में सीडीपीएलसी की बहुसंख्यक हिस्सेदार है। यह सौदा नियामक अनुमोदन और अन्य सामान्य शर्तों के अधीन है, और इसके चार से छह महीने में पूरा होने की उम्मीद है। सौदे के पूरा होने पर, कोलंबो डॉकयार्ड भारत की एमडीएल की सहायक कंपनी बन जाएगी।

आरएसएस को संविधान नहीं, मनुस्मृति चाहिए

राहुल गांधी बोले-संघ का नकाब फिर से उतरा

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर शुक्रवार को निशाना साधा। आरएसएस के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले ने

संविधान की प्रस्तावना में समाजवादी और धर्मनिरपेक्ष शब्दों की समीक्षा करने संबंधी बयान दिया। इसे लेकर राहुल ने आरोप लगाया कि आरएसएस का नकाब फिर से उतर गया है। उसे संविधान नहीं, मनुस्मृति चाहिए। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने एक्स पर पोस्ट किया, 'आरएसएस का नकाब फिर से उतर गया। संविधान इन्हें चुभता है क्योंकि वो समानता, धर्मनिरपेक्षता और न्याय की बात करता है।' राहुल गांधी ने आरोप लगाया, 'आरएसएस-भाजपा को संविधान नहीं, मनुस्मृति चाहिए। ये बहुजनों और गरीबों से उनके अधिकार छीनकर उन्हें दोबारा गुलाम बनाना चाहते हैं। संविधान जैसा ताकतवर हथियार उनसे छीनना इनका असली एजेंडा है।' कांग्रेस नेता ने कहा कि आरएसएस ये सपना देखना बंद करे क्योंकि उसे सफल नहीं होने दिया जाएगा। राहुल गांधी ने इस बात पर जोर दिया, 'हर देशभक्त भारतीय आखिरी दम तक संविधान की रक्षा करेगा।' आपातकाल पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए होसबाले ने कहा था, 'बाबासाहेब ने जो संविधान बनाया, उसकी प्रस्तावना में ये शब्द कभी नहीं थे।

परिक्रमा

आपातकाल में संविधान में हुए संशोधन को लेकर विवाद

अरुण पटेल

प्रबंध संपादक, सुबह सवेरे

भाआपातकाल में संविधान की प्रस्तावना में जोड़े गये समाजवादी और पंथनिरपेक्ष शब्दों को हटाने की मांग राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबले द्वारा करने के बाद इसके पक्ष-विपक्ष में प्रतिक्रियायें सामने आने लगी हैं। भारतीय जनता पार्टी और संघ परिवार ने आपातकाल के पचास साल पूरे होने के अवसर पर आपातकाल में हुई ज्यादतियों को जोरशोर से उठाया तो इस पर कांग्रेस की प्रतिक्रिया भी सामने आई। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि पचास साल बाद ही सही फिर से एक बार इस पर बहस प्रारम्भ हुई। अब यह सिलसिला लम्बा चलेगा या जल्द थम जायेगा यह आने वाले कुछ समय में ही पता चल सकेगा।

होसबले ने कहा है कि आपातकाल के दौरान जब देश में मौलिक अधिकारों का हनन हो रहा था, संसद और न्यायालय दोनों पंगु थे, तब इन शब्दों को जोड़ा गया। होसबले के अनुसार बाबा भीमराव आम्बेडकर द्वारा निर्मित संविधान की प्रस्तावना में ये शब्द नहीं थे। होसबले इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सहयोग से आयोजित इमरजेंसी के पचास साल संबंधी एक आयोजन में बोल रहे थे। उनका कहना था कि समाजवादी और पंथनिरपेक्ष शब्दों की चर्चा तो हुई लेकिन इन्हें निकालने के प्रयास नहीं किए गए। यह विचार करने की आवश्यकता है कि क्या ये शब्द संविधान की प्रस्तावना में शाश्वत हो गये हैं। उन्होंने संविधान की प्रस्तावना में इन शब्दों के रखे जाने के उद्देश्य और उन्हें हटाने की आवश्यकता प्रतिपादित की। इस दौरान लोकसभा में प्रतिपक्ष के नेता राहुल गांधी भी उनके निशाने पर उस समय आ गये जब उन्होंने कहा कि आज जो लोग संविधान की प्रति लेकर घूम रहे हैं उन्होंने आपातकाल के बारे में माफी नहीं मांगी है, उन्हें माफी मांगनी पड़ेगी। उन्होंने यह भी कहा कि एक लाख से अधिक लोगों को जेल में डालने और साठ लाख से अधिक लोगों का बंध्याकरण के लिए मजबूर करने वाले लोगों को देश से माफी मांगनी चाहिये।

मोदी-खरगे आमने-सामने

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोशल मीडिया मंच से एक्स पर कई पोस्ट कर कहा कि कोई भी भारतीय यह कभी नहीं भूलेगा कि आपातकाल के दौरान संविधान की भावना का कैसे उल्लंघन किया गया। उन्होंने संवैधानिक सिद्धान्तों को मजबूत करने की अपनी सरकार की प्रतिबद्धता भी दोहराई। मोदी ने कहा कि यह भारतीय लोकतंत्र के इतिहास का सबसे अंधकारमय अध्याय में से एक है। आपातकाल में संवैधानिक मूल्यों को दरकार कर दिया गया, मौलिक अधिकारों को निलंबित कर दिया गया, प्रेस की आजादी को दबा दिया गया तथा बड़ी संख्या में लोगों को जेल में डाल दिया गया था। उधर आपातकाल के 50 वर्ष पूरे होने पर केंद्र सरकार और भाजपा शासित राज्यों में किये जा रहे कार्यक्रमों पर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने सवाल उठाते हुए कहा कि हमारी संविधान बचाओ यात्रा से भाजपा घबरा गयी है और इसीलिए ये इमरजेंसी के पचास सालों की बात कर रहे हैं। जो लोग संविधान के बचाव की अब बात कर रहे हैं और इमरजेंसी की बात बार-बार दोहरा रहे हैं, उनका संविधान बनाने में कोई योगदान नहीं है।

केंद्रीय जलशक्ति मंत्री सी.आर. पाटिल ने राजधानी भोपाल में आपातकाल दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में दोटूक शब्दों में कहा कि देश आजाद होने के बाद देश में लोकतंत्र का राज था। कांग्रेस का नेहरु-गांधी परिवार राजशाही में राज करना चाहता था इसलिए लोकतंत्र का गला घोंट कर आपातकाल लगाया गया। कांग्रेस जनता से विश्वासघात करने वाली पार्टी है, उसी पार्टी के नेता संविधान की प्रति हाथ में लेकर देश की जनता को गुमराह करने का प्रयास कर रहे हैं। कांग्रेस विधायक और पूर्व नेता प्रतिपक्ष अजयसिंह का कहना था कि भाजपा को अपने शासनकाल के पिछले 11 सालों को लेकर संविधान हत्या दिवस आयोजित करना चाहिये। यह ऐसा समय रहा जब लगातार संविधान की हत्या की जाती रही है। गाहे-बगाहे संविधान को बदलने की बात भाजपा करती रही है। पिछले 11 वर्षों से जनता अघोषित आपातकाल झेल रही है, लोग महंगाई से परेशान हैं।

और यह भी

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के अनुसार अब रतलाम की पहचान बदल रही है। उनका कहना है कि रतलाम अब तक सेव, साड़ियों और सोने के लिए जाना जाता था, अब स्किल, स्केल और स्र्टाटअप के लिए जाना जायेगा। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय एमएसएमई दिवस पर रतलाम में रीजनल इंडस्ट्री, स्किल एवं एम्प्लायमेंट 2025 कार्यक्रम में यह बात कही। मुख्यमंत्री ने यहां घोषणा की कि यहां पर पहले से चल रही एमएसएमई इकाइयों ने नवकरणीय ऊर्जा संयंत्र लगाये तो उन्हें 20 फीसदी सबसिडी दी जायेगी। इस कान्क्लेव में 30 हजार 402 करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव मिले, जिसमें 35 हजार लोगों को रोजगार मिलने की संभावना जताई गई। एक ओर जहां रतलाम में निवेश प्रस्तावों की बारिस आई तो वहीं दूसरी ओर बुंदेलखंड अंचल में भी विकास के नये द्वार खुलने की आहट सुनाई दे रही है। यह अंचल अब और अधिक समृद्ध होगा क्योंकि छतरपुर की बक्सवाहा तहसील का सूरजपुरा फास्फोराइट उगलने लगेगा। यहां इस खनिज के विशाल भंडार में खनन की केंद्रीय मंत्रालय ने स्वीकृति प्रदान कर दी है।

इंदौर-देवास रोड पर 32 घंटे के जाम से हुई 3 मौतें

8 किलोमीटर के इस जाम में 4 हजार गाड़ियां फंसीं थी

भोपाल/इंदौर (नप्र)। इंदौर-देवास रोड पर शुक्रवार को 32 घंटे का जाम लग गया। 8 किलोमीटर के इस जाम में 4 हजार गाड़ियां फंसीं थी। इस दौरान तीन लोगों इंदौर के कमल पांचाल, शुजालपुर के बलराम पटेल (55) और गारी पिपल्या गांव के संदीप पटेल (32) की मौत हो गई। दो को हार्ट अटैक आया, जबकि एक पेशेंट ने अस्पताल पहुंचने से पहले दम तोड़ दिया।

लंबे जाम में फंसे इंदौर के सैटेलाइट टाउनशिप, बिजलपुर निवासी किसान कमल पांचाल (62) की कार जाम में डेढ़ घंटे तक फंसी रही। इस दौरान उन्हें घबराहट हुई, वे तड़पते रहे और बेहोश हो गए। कमल को देवास के एक प्राइवेट हॉस्पिटल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया।

बहन की तेरहवीं में शामिल होने जा रहे थे- नजदीकी रिश्तेदारों ने बताया कि गुरुवार को कमल पांचाल की बहन की तेरहवीं का कार्यक्रम था। इसमें शामिल होने के लिए वे पत्नी शारदा, बेटे विजय और बहू प्रियंका के साथ कार में जा रहे थे। डायवर्शन की वजह अर्जुन बड़ौदा के पास जाम लग गया, जिसमें उनकी कार भी फंस गई।कुछ देर बाद उन्हें घबराहट होने लगी। इस दौरान बेटे विजय ने कार निकालने की कोशिश की, लेकिन वह आगे बढ़ नहीं सकी, क्योंकि वहां से मूव करने तक की जगह नहीं थी। इस बीच वे तड़पते रहे और बेहोश हो गए।

करीब डेढ़ घंटे बाद जब जाम खुला तो परिवार के लोग उन्हें उसी कार से देवास के एक प्राइवेट हॉस्पिटल ले गए, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।

जाम हटाने की कोई व्यवस्था नहीं थी- दोपहर को उनका शव इंदौर लाया गया, जहां उनका अंतिम संस्कार किया गया। परिवार में दो बेटे हैं, दोनों की शादियां हो चुकी हैं। परिवार का कहना है कि जाम हटाने के लिए कोई व्यवस्था नहीं थी। यहां अक्सर जाम लगता है। बारिश के दिनों में तो और भी फजीहत हो जाती है।

हार्ट पेशेंट को इंदौर ले जा रहे थे, जाम में फंसे- गारी पिपल्या गांव के रहने वाले संदीप पटेल (32) की भी जाम में फंसने के दौरान हार्ट अटैक से मौत हो गई। चाचा सतीश पटेल ने बताया कि गुरुवार शाम संदीप के सीने में दर्द उठा। इस पर वे उसे मांगलिया स्थित अस्पताल ले जाने के लिए निकले।पास ही रेलवे ब्रिज का काम चल रहा है, वे जाम में फंस गए। सिंगापुर टॉउनशिप के रास्ते से निकलने की कोशिश की तो वहां भी जाम लगा था। बमुश्किल वहां से निकलकर मांगलिया पहुंचे। वहां डॉक्टरों ने हालत गंभीर बताकर इंदौर ले जाने को कहा। इंदौर आने के दौरान तलावली चांदा और देवास नाके पर जाम में 3 घंटे फंसे और इस दौरान संदीप ने दम तोड़ दिया।

ऑक्सीजन खत्म हुई, 1 घंटे जाम में फंसे रहे- शुजालपुर के कैंसर पीड़ित बलराम पटेल (55) को परिजन इंदौर ला रहे थे। कार में दो ऑक्सीजन सिलेंडर थे। एक सिलेंडर देवास में दूसरा 2 घंटे जाम में फंसे रहने के दौरान खत्म हो गया। परिवार के लोग परेशान हो गए।उन्होंने जाम से निकलने की कोशिश की, लेकिन जगह ही नहीं मिली और हालत बिगड़ती चली गई और आखिरकार बलराम पटेल ने दम तोड़ दिया। मौत के बाद शव लेकर लौटने में भी परिवार के लोग 1 घंटे जाम में फंसे रहे।

किसान बोले- 10 दिन में समाधान नहीं तो पदयात्रा करेंगे- इंदौर-देवास बायपास पर जाम में फंसने से तीन लोगों की मौत के बाद किसानों ने आंदोलन की चेतावनी दी है। किसान नेता हंसराज मंडलोई ने बताया कि लंबे समय से प्रशासन से मांग कर रहे हैं। निरंजनपुर से देवास तक के बायपास पर लगने वाले भारी जाम की समस्या का स्थायी समाधान किया जाए। मंडलोई ने कहा कि उन्होंने मंत्री तुलसी सिलावट से कई बार समाधान की मांग की, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। उन्होंने आरोप लगाया कि मांगलिया टोल कंपनी को लाभ पहुंचाने के लिए जानबूझकर मांगलिया से व्यासखेड़ी की सड़क बंद कर दी गई, जिससे बायपास और पुराने एबी रोड पर निरंतर जाम लग रहा है।

उन्होंने चेतावनी दी कि यदि 10 दिन के भीतर समस्या का समाधान नहीं हुआ, तो वे इंदौर से देवास तक पदयात्रा करेंगे और मांगलिया, शिप्रा, डकाच्या, देवास नाका समेत कई इलाकों को बंद कराया जाएगा। प्रशासन से मृतकों के परिवार को 50-50 लाख रुपए मुआवजा और एक सदस्य को सरकारी नौकरी देने की मांग की है।

इंदौर में बारिश में नहीं होगी चालानी कार्रवाई

इधर, इंदौर में मानसून सत्र के दौरान यातायात व्यवस्था को लेकर कलेक्टर आशीष सिंह ने संबंधित विभागों की बैठक ली। बैठक में तय किया गया कि वर्षाकाल के दौरान चालानी कार्रवाई नहीं की जाएगी। बैठक में कलेक्टर आशीष सिंह ने राष्ट्रीय राजमार्ग और शहर में यातायात को हर हाल में सुचारू बनाने के लिए निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि ऐसी व्यवस्था सुनिश्चित की जाए, जिससे वर्षाकाल में किसी भी हालत में यातायात बाधित नहीं हो, जाम न लगे।

कलेक्टर बोले- एनएचएआई ने बनाई कमजोर सर्विस रोड

इंदौर कलेक्टर आशीष सिंह ने बताया कि बायपास पर एनएचएआई ने कमजोर सर्विस रोड बनाई है। इसके चलते भारी वाहनों के निकलने और लगातार ट्रैफिक का दबाव होने से गड्?ढे हो गए हैं। इस वजह से ट्रैफिक जाम हो रहा है। जाम के कारण अब तक दो मौतें रिपोर्ट हुई हैं।

इंदौर-उज्जैन रोड बनने के कारण भी इंदौर-देवास रोड पर ट्रैफिक का दबाव बढ़ा है। मांगलिया में बन रहे फ्लाई ओवर के कारण भी बायपास पर ट्रैफिक बढ़ा हुआ है। इंदौर-देवास रोड पर बनी सर्विस रोड से जैसे-जैसे ट्रैफिक डायवर्ट होगा वैसे ही एनएचएआई द्वारा सर्विस रोड तैयार की जाएगी।

भारी वाहनों के लिए रूट में ये बदलाव किए

महू-मानपुर की ओर आने वाले भारी वाहनों को एबी रोड पर होते हुए उज्जैन-बदनावर रूट पर डायवर्ट किया है।

जयपुरिया इंस्टीट्यूट से डकाच्या-शिप्रा जाने वाले रास्ते पर भी वाहनों को डायवर्ट कर रहे हैं।

प्रदेश में बारिश का स्ट्रॉन्ग सिस्टम एक्टिव

चित्रकूट की गोदावरी गुफा बंद, सतना में घरों में बारिश का पानी घुसा

भोपाल (नप्र)। दो ट्रफ के गुजरने की वजह से मध्यप्रदेश में बारिश का स्ट्रॉन्ग सिस्टम एक्टिव है। इस वजह से कई जिलों में तेज बारिश हुई। 7 जिलों में भारी बारिश जारी रहने का अलर्ट है। 5 दिन तक प्रदेश में ऐसा ही मौसम रहेगा।

मौसम विभाग ने निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर के खजुराहो, दमोह, कटनी, शिवपुरी और पन्ना में आकाशीय बिजली गिरने या चमकने से साथ मध्यम से भारी बारिश में जारी रहने का अलर्ट जारी किया है। साथ ही अशोकनगर, शिवपुरी, ओरछा, सतना, सागर, बालाघाट, मंडला, सिवनी, छिंदवाड़ा, मैहर, जबलपुर, रीवा, मऊगंज, उज्जैन, भिंड, नरसिंहपुर और डिंडौरी में भी बारिश होने की संभावना जताई है।

शनिवार को बड़वानी जिले के सेंधवा में बारिश के चलते धुंध छाई हुई थी। मुंबई-आगरा नेशनल हाईवे के बिजासन घाट इलाके में मनमोहक नजारा देखने को मिला। डिंडौरी में पिछले 24 घंटे से रुक-रुककर बारिश जारी है। यहां मेहदवानी में दनदना बांध की नहर फूट गई। सतना जिले के चित्रकूट में पहाड़ी पर से तेज पानी बह रहा है। श्रद्धालुओं की सुरक्षा को देखते हुए गुप्त गोदावरी गुफा को बंद करा दिया गया है।

सतना जिले में तेज बारिश के बाद कई इलाकों में पानी भर गया है। बारिश का पानी घरों में घुस गया है। कई गांवों में नदी नाले उफान पर होने से गांवों का आपसी संपर्क टूट गया है। लोग जन जोखिम में डालकर रपटे पार कर रहे हैं।

बड़वानी में कीचड़ से फिसल रहे बाइक सवार- बड़वानी में खराब सड़कों से लोग परेशान हैं। बस स्टैंड से राजघाट रोड पर मिट्टी के ट्रैक्टर-ट्रॉलियों के आवाजाही से कीचड़ फैल गया है। शनिवार को बारिश के बाद यहां कई बाइक सवार फिसलकर गिरे।

पन्ना में उफनता नाला पार कर रहे लोग

पन्ना जिले के हरसा नाले में पानी बहाव तेज हो गया है। पानी पुल के दो फीट ऊपर से बह रहा है। यहां लोग जान जोखिम में डालकर नाला पार कर रहे हैं। बाइक को लकड़ी के सहारे उठाकर दूसरी तरफ ले जा रहे हैं।

पानी के तेज बहाव के चलते चित्रकूट की गुप्त गोदावरी गुफा बंद- सतना जिले के चित्रकूट में 2 घंटे भारी बारिश हुई। इससे पहाड़ी पर से तेज पानी बहने लगा। श्रद्धालुओं की सुरक्षा को देखते हुए गुप्त गोदावरी गुफा को बंद करा दिया गया है।

श्योपुर के कलमुण्डा गांव में घुसा मगरमच्छ

श्योपुर के बड़ौदा के कलमुण्डा गांव में मगरमच्छ घुस आया। ग्रामीणों ने वन विभाग को सूचित किया। बड़ौदा रेंज से वन विभाग की टीम ने मगरमच्छ का रेस्क्यू किया।

बड़वानी के बिजासन घाट का मनमोहक नजारा

बड़वानी का बिजासन घाट सतपुड़ा की पहाड़ियों से घिरा है। हरियाली के साथ बारिश के बीच यहां के नजारे मनमोहक नजर आते हैं। हाईवे से गुजरने वाले वाहन चालक यहां कुछ देर रुककर इस नजारे को मोबाइल कैमरे में कैद कर ले जाते हैं। मध्यप्रदेश- महाराष्ट्र की सीमा पर घाट पर बड़ी बिजासन माता का मंदिर है, ऐसे में बड़ी संख्या में श्रद्धालु यहां आते हैं।

बुरहानपुर के पीएमश्री स्कूल का खेल मैदान बना तालाब

बुरहानपुर जिले में हैदरपुर स्थित पीएम श्री स्कूल का मैदान तालाब बन गया है। छात्रों को स्कूल में पहुंचने में भी परेशानी आ रही है। कुछ समय पहले ही 5-5 लाख रूपए की लागत से खेल मैदान बनाए गए हैं। यह काम आरईएस विभाग के माध्यम से कराया गया है। आरईएस विभाग की कार्यपालन यंत्री अनामिका शर्मा ने इस मामले में एसडीओ और सब इंजीनियर को पत्र जारी कर निरीक्षण करने को कहा है।

कांग्रेस की गैर इरादतन हत्या का केस दर्ज करने की मांग

कांग्रेस प्रवक्ता अमित चौरसिया और देवास शहर कांग्रेस अध्यक्ष मनोज राजानी ने कहा कि अर्जुन बड़ोद के पास निर्माणाधीन पुल के कारण कई दिनों से बायपास पर भारी जाम लग रहा है। इसी जाम में फंसकर दो दिन में तीन लोगों की मौत हो चुकी है। उन्होंने आरोप लगाया कि एनएचएआई, ठेकेदार और प्रशासन की लापरवाही से पीड़ितों को समय पर इलाज नहीं मिल सका, इसलिए यह केवल दुर्घटना नहीं, बल्कि गैर इरादतन हत्या है। कांग्रेस ने मांग की है कि दोषी अधिकारियों और ठेकेदार पर मुकदमा दर्ज किया जाए। सरकार परिवारों को एक-एक करोड़ रुपए मुआवजा और एक सदस्य को सरकारी नौकरी दे।

राज्य सरकार मुश्किल वक्त में हर गरीब और जरूरतमंद के साथः मुख्यमंत्री

मंत्री कुंवर शाह को खिवनी पहुंचकर स्थिति का जायजा लेने और प्रभावित परिवारों को हरसंभव सहायता उपलब्ध कराने के निर्देश

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में राज्य सरकार जनहितैषी कार्यक्रम और योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए प्रतिबद्ध है। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग और सामान्य वर्ग के गरीब परिवारों सहित सभी के जीवन में समृद्धि आए, इस उद्देश्य से परिवारों को हरसंभव सहायता उपलब्ध कराई जा रही है। प्रदेश में संवेदनशील सरकार है और हम हर मुश्किल वक्त में गरीब और जरूरतमंद के साथ खड़े हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि देवास के खिवनी अभ्यारण्य क्षेत्र में वन विभाग के अमले द्वारा की गई कार्यवाही के संबंध में जनजातीय कार्य मंत्री कुंवर विजय शाह को खिवनी पहुंचकर स्थिति का जायजा लेने और प्रभावित परिवारों को हरसंभव सहायता उपलब्ध कराने निर्देशित किया गया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वन विभाग को भी निर्देश दिए गए है कि ऐसी कोई कार्यवाही नहीं करें, जिससे वर्षाकाल में लोगों को परेशानी हो। प्रदेश में नियम प्रक्रियाओं का पालन करते हुए सभी जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ जरूरतमंदों को दिया जा रहा है। राज्य सरकार प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में देश के साथ प्रदेश को शीर्ष पर लाने के लिए प्रतिबद्ध है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शनिवार को मुख्यमंत्री निवास से जारी संदेश में यह विचार व्यक्त किए।

प्रधानमंत्री मोदी को धर्म चक्रवर्ती की उपाधि से अलंकृत करना सम्पूर्ण सनातन अनुयायियों के लिए गर्व का विषय: सीएम

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने 'धर्म चक्रवर्ती' की उपाधि से सम्मानित किए जाने पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का प्रदेशवासियों की ओर से आत्मीय अभिनंदन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारत की प्राचीन संस्कृति और परंपराओं ने सदैव ही विश्व को प्रकाशित किया है। प्रधानमंत्री श्री मोदी को 'धर्म चक्रवर्ती' की उपाधि से अलंकृत करना सम्पूर्ण सनातन अनुयायियों के लिए गर्व का विषय है। उल्लेखनीय है कि आचार्य विद्यानंद जी महाराज के शताब्दी समारोह में आचार्य श्री 108 प्रज्ञा सागर जी महाराज ने प्रधानमंत्री श्री मोदी को धर्म, नीति सेवा, आत्मबल और राष्ट्र के समग्र विकास के संकल्प को साकार करने के लिए यह उपाधि प्रदान की गई।

सरकार की छवि बिगाड़ रहे अधिकारी: शिवराज

सीहोर में वन विभाग पर भड़के, आदिवासियों से कहा- अफसर गड़बड़ करते हैं मामा आपके साथ

सीहोर (नप्र)। सीहोर में केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान वन विभाग के अफसरों पर भड़क गए। उन्होंने कहा कि ये अफसर सब गड़बड़, सड़बड़ करते हैं। वन विभाग के अधिकारी सरकार की छवि बिगड़ने की कोशिश कर रहे हैं।

जमीन की शिकायत लेकर आए आदिवासियों से शिवराज सिंह ने कहा- मामा तुम्हारे साथ है। मैं फॉरेस्ट डिपार्टमेंट वालों से कहता हूं कि गलती न करें, ये किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

शिवराज सिंह चौहान शनिवार को सीहोर में कलेक्ट्रेट में बैठक में शामिल होने पहुंचे थे। यहां बड़ी संख्या में आदिवासी समुदाय के लोग जिले में बनने वाले सरदार पटेल अभयारण्य का विरोध करने कलेक्ट्रेट पहुंचे थे। जिन ग्रामों में अभयारण्य का दायरा पहुंच रहा है, वहां के लोगों ने जिला प्रशासन को ज्ञापन सौंपकर अभयारण्य को निरस्त करने की मांग की है।

आदिवासी बोले- अभयारण्य निरस्त किया जाए- आदिवासियों का कहना है कि जिले में हमारे जनजाति समाज के लगभग 200 गांव में 2 लाख जनसंख्या रहती है। समाज वन परिक्षेत्र में रहकर वन भूमि पर कृषि कार्य कर अपना जीवन यापन करता है। वन भूमि पर वर्षों से हमारा कब्जा है।

कुछ किसानों को वन अधिकार पत्र बना दिए गए हैं। कई के नहीं बन पाए। ऐसे में वन विभाग और वन विकास निगम आए दिन 25 से 30 वर्ष पुरानी कृषि भूमि पर नया अतिक्रमण बताकर कार्रवाई कर रहा है। इसलिये मांग है कि प्रस्तावित सरदार वल्लभ भाई पटेल अभयारण्य को तत्काल प्रभाव से निरस्त किया जाए।

हमें पुरानी जमीन से हटा रहा है वन विभाग- आदिवासियों ने कहा कि वन अधिकार अधिनियम 2006 के अंतर्गत सीहोर जिले के जितने भी वन मित्र पोर्टल पर आवेदन किए गए हैं। शीघ्र उनका निराकरण कर उनका वन अधिकार पत्र बनाया जाए। वन विभाग साक्ष्य न होने के अभाव में हमारी पुरानी कृषि भूमि को नई बताकर जो कार्रवाई कर रहा है उसे रोका जाए।

आदिवासियों से मिले केंद्रीय कृषि मंत्री

कलेक्टर कार्यालय में बैठक में शामिल होने आए शिवराज सिंह चौहान से भी आदिवासियों ने मुलाकात की। आदिवासियों से चर्चा करते हुए शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि उनके साथ अन्याय नहीं होने दिया जाएगा। वन विभाग के अधिकारी सरकार की छवि बिगड़ने की कोशिश कर रहे हैं। शिवराज सिंह ने इस मामले में आदिवासियों के साथ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से मिलने की बात भी कही है।

शिवराज सिंह ने कहा कि वह खेमरी में बैठकर आदिवासियों को बढ़ाने के लिए काम करेंगे। सरकार कोई कसर नहीं छोड़ेगी। मामा आपके साथ रहेंगे। शिवराज सिंह ने कहा कि मैं फिर कहता हूं फॉरेस्ट डिपार्टमेंट वालों से, वन विभाग वालों से कि दोबारा ऐसी गलती मत करना। जो कर रहे हैं वो सरकार की छवि खराब करने की कोशिश कर रहे हैं। ये न करें किसी भी कीमत पर।

वेब सीरीज समीक्षा

आदित्य दुबे

लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव के प्रबन्ध संचालक हैं।

पंचायत: ग्राम्य जीवन के सच के कई पहलू छूटे

गाँव, वहाँ के लोग और कथित ग्राम्य संस्कृति से आपूरित वेबसिरीज ÷पंचायत÷ में गाँव में ग्राम्य जीवन की दशा और दिशा तथा उसमें जज़्ब होती राजनीति (और हिंसा को भी) जीवनशैली में आ रहे बदलाव के साथ जिस खूबी से पेश किया जाता रहा है उससे इस वेबसिरीज़ को आरम्भ से ही एक बड़े दर्शक वर्ग द्वारा काफी पसन्द किया जाता रहा है । निर्माता-निर्देशक ने इस एक समर्थन को सिरीज की शानदार प्रस्तुति से साधा भी है । गाँव की भाषा ,ठेठ गँवई प्रस्तुति और अभिनेता -अभिनेत्रियो के बेजोड़ अभिनय से यह वेबसिरीज एक लोकप्रिय प्रस्तुति के रुप में स्थापित हो चुकी है ।एक ओसत गाँव की कहानी में जो होना चाहिए उसे अपनी पटकथा में चन्दन कुमार ने सहेजने की कोशिश की है मगर जो कुछ कहा जा रहा है और जो कुछ वाकई घट रहा है उसके बीच का फासला बरकरार है । गाँव में बिजली का अक्सर गुल हो जाना , ग्राम प्रधान और खण्ड विकास कार्यालय के बीच विकास योजनाओं का लेकर खींचतान , मनरेगा के काम का ठेके पर होना , स्कूल के अध्यापकों का इस बात को लेकर अभी से चिन्तित होना कि जनगणना में उनके ऊपर कितना बोझ आयेगा ? यह बात सिरीज़ में कहाँ है ?

इस वेबसिरीज़ में चार चर्चित चरित्रों - सचिवजी (जितेन्द्र कुमार), विकास (चन्दन राय) , प्रह्लाद चा (फैसल मलिक) और प्रधान जी (रघुवीर यादव) को जोड़कर निर्माता-निर्देशक ने चारपाई के समान जो एक संरचना की थी वो इस चौथे सीज़न के आने तक असंतुलित हो गई है । इन्हीं चरित्रों का तालमेल इस सिरीज का हासिल था जो गड़बड़ा गया है ।प्रह्लाद चा और विकास के रिश्तों के बीच की भावनात्मकता कहीं खो गई है , न इन चरित्रों की सादगी मन को छूती है न प्रधानजी का मज़ाक़िया अन्दाज़ ही खुलकर सामने आ पाता है और नहीं उनकी दिल को छूने वाली तकरीरें सामने आ पाती हैं। मँजू देवी (नीना

गुप्ता) और क्रांतिदेवी (नीता राजवार) का आमने-सामने का मुकाबला है मगर दोनों पूरी सिरीज़ में जवाबी मुकाबले से कन्नी काटती नजर आती हैं।

पंचायत सीजन चार को आखिर तक देखने की वजह हालांकि इसके कलाकारों की दमदार परफॉरमेंस ही इस बार भी है। रघुवीर यादव और नीना गुप्ता इस सीजन को अपने कंधों पर साधे रखने की पूरी कोशिश करते हैं। दुर्गेश कुमार इस बार सीरीज के हीरो जितेंद्र कुमार पर भारी पड़े हैं। बाकी कलाकारों ने अपने अपने चरित्रों संग बस खानापूरी की है। सान्विका के चेहरे की मासूमियत अब भी प्रभावित करती है लेकिन लगता है कि करार में बंधे होने के चलते वह दूसरी वेबसिरीज़ नहीं कर पा रही हैं। और, इधर सिरीज की पकड़ लगातार कमजोर होती जा रहा है। तीसरे सीजन में ही ये सिरीज़ लड़खड़ाई थी और लगा था कि चौथे सीजन में इसे बनाने वाले इसे सम्भाल लेंगे, लेकिन जब ओटीटी प्रबंधन पहले से ही पाँचवे सीजन की मंजूरी दे चुका हो तो फिर चौथा सीजन कोई अपने दर्शकों को ध्यान में रखकर क्यों बनाएगा ?

कॉमेडी ड्रामा संवर्ग की भारत की सबसे पसंदीदा वेबसिरीज़ में से एक टीवीएफ की पंचायत अपने चौथे सीजन के साथ अमेजन प्राइम वीडियो पर वापसी कर चुकी है। गत 24 जून 2025 को रिलीज हुए इस नए सीजन को लेकर दर्शकों को काफी उम्मीदें थीं, खासतौर पर पिछले सीजन की थोड़ी निराशा के बाद। अगर आप पिछले सीजन की असफलता के बाद पंचायत सीजन 4 से ज्यादा उम्मीदें नहीं रख रहे हैं तो आप बिल्कुल सही सोच रहे हैं। जैसा कि निर्माताओं ने बताया, चौथी किस्त ग्राम पंचायत चुनावों पर केंद्रित है, जहाँ मौजूदा प्रधान मंजू देवी और नई उम्मीदवार क्रांति देवी आमने-सामने हैं। इन सबके बीच, सचिव जी अपने परीक्षा परिणामों की प्रतीक्षा कर रहे हैं और अब उनकी प्रेम कहानी भी बाहरी तौर पर ज्यादा है, जबकि चार मुख्य पुरुष पात्रों के बीच दोस्ती स्थिर बनी हुई है। हालांकि इस बार पकड़ ढीली होती दिख रही थी और पंचायत की प्रामाणिक ग्रामीण हवा नहीं बह रही थी।

सीजन चार की सबसे बड़ी कमजोरी उसका निर्देशन और स्क्रिप्ट है। पहले दो सीजन की तरह ग्रामीण जीवन की गहराई और मासूमियत इस बार गायब है। चुनावी राजनीति की कहानी ने सिरीज़ की आत्मा को कहीं पीछे छोड़ दिया है। महिला चरित्र, जो पहले बराबरी में दिखते थे, इस बार पृष्ठभूमि में धकेल दिए गये हैं, और पुरुष पात्रों की अतिरंजित हरकतें कभी-कभी असहज करती हैं। फिर भी दर्शकों का टोटा संगीत का जहाँ तक सवाल है इस बार बात जमी नहीं । ' खाली खाली सा', 'आसमान रूठा' और 'हिंद का सितारा' जैसे पिछले सीज़न के यादगार गानों की तुलना में इस बार संगीत फीका रहा। न कोई नया गाना याद रहने लायक है और न ही पुराने ट्रैकों का इस्तेमाल प्रभाव छोड़ पाया।

कुछ सबक

कमलेश कुमार दीवान

जिंदगी के कुछ सबक भी तो मिले हैं मुझको
तुमको मिलते वो सबक भी तो मिले हैं मुझको।

राह में जब भी अकेला चला तो क्या क्या पाया
कहां ठहरें कई फलक भी तो मिले हैं मुझको।

सुख रहे दुःख मिले और कोई खैरख्वाह नहीं
साया है उसी की झलक भी तो मिले हैं मुझको।

कौन था जो राह में मिल के बिछड़ गया अब तो
कहां गया वो कल तलक भी तो मिले हैं मुझको।

अभी इस हाल में किसकी नजरों से देखें दीवान
कुछ आंसू लिए पलक भी तो मिले हैं मुझको।

आदमियों के जंगल में सांप की मौत

हास्य व्यंग्य

सुरेश सौरभ

सांपों के जंगल में एक सभा चल रही थी। एक सांपिन फूट-फूट कर रोए जा रही थी, तभी मुखिया सांप बोला-बड़े दुख की बात है कि हमारा भोला सांप मर गया । वह अभी युवा था, कैसे मरा यह मेरी समझ से बाहर है, इसकी तफ्तीश के लिए आज यह सभा बुलाई गई है, कोई बता सकता है कि मरने से पहले भोला सांप कहां गया था, तभी भोला की पत्नी सांपिन बोली-कल पूरब वाले मैदान की तरफ गए थे।

तब एक बुजुर्ग सांप बोला-कल तो मुझे भोला ठीक-ठाक मिला था, कह रहा था वह नगर की तरफ टहलने जा रहा है। तब मुखिया ने रोते हुए सांपिन से पूछा-जब नगर से भोला लौटा तब तुमसे कुछ बता रहा था। सांपिन ने रूंधे गले से कहा-मुझसे कह रहे थे कि चलते-चलते वह एक आदमियों के बड़े जंगल में पहुंच गए थे, उस जंगल में एक किलेनुमा पहाड़ पर चढ़ गए, जहां बहुत लोग इकट्ठा थे, उन लोगों की हरकतों तथा शोरगुल से वह परेशान होने लगे तब अचानक किसी आदमी के दबाव पड़ने, पर

उसके पैर में काट लिया, तभी वहां हड़कंप मच गयी, किसी तरह वह बच के चले आए और रात में सोते-सोते मर गये। तब दूसरा बुजुर्ग नाग बोला-मेरी समझ में आ गया। माजरा क्या है। भोला ने जरूर किसी नेता को काटा होगा। कल मैं एक दूसरे जंगल में गया था, वहां भी इससे मिलता-जुलता केस आया था, एक सांप ने एक नेता को काटा था और वह सांप मर गया। तब मुखिया सांप बोला-चाचा आप कहना क्या चाहते हैं।

बुजुर्ग नाग ने उदास होकर कहा-भोला ने जरूर किसी नेता के काटा होगा इसलिए वह मर गया। अब सारे सांप हैरत से एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे। और सभा में घना सन्नाटा पसर गया। तब बुजुर्ग नाग बोला-हम सांपों में यह खूबी है जब तक किसी का दबाव न पड़े या कोई जब तक हमें परेशान न करें, तब तक हम उसे नहीं काटते, लेकिन जहां नेता हो, वहां कोई नेता ऐसा गलती से या जान-बूझकर कर दे, तो वहां से चुपचाप खिसक लेने में ही हमारी भलाई है। तभी एक युवा सांप बोला-इसकी पहचान कैसे हो यह बताने की कृपा करें महाशय। तब बुजुर्ग नाग ने उसका उत्तर दिया, 'जो बात करते समय हमेशा यह कहे, हम जनता के सेवक हैं। हम जनता के लिए यह करेंगे, जनता के लिए वह करेंगे, हम जनता के लिए संघर्ष करेंगे, हम जनता को मुफ्त आनाज देंगे। मुफ्त बिजली देंगे। मुफ्त पानी देंगे। हम जनता के अच्छे दिन लायेंगे। जनता को आत्म निर्भर बनायेंगे, तो यह समझ लेना चाहिए कि वहां कोई नेता ही है।÷ बुजुर्ग नाग की बातें सभी एकाग्रता से सुन रहे थे, गुन रहे थे।

सभा के अंत में मुखिया सांप ने सबको सचेत करते हुए कहा-आप सभी से मेरा निवेदन है, नेता नाम के जन्तु से बचकर रहे। जब नेता को काटने पर सांप मर जातें हैं, तब नेता लोगों का विकास कैसे करतें हैं, कैसे लोगों का भला करते हैं यह मेरी समझ से परे है, पर आज की सभा में यह जानकारी मिल गई कि विषैले नेताओं से दूर रहने में ही हमारी भलाई है।

राजकुमार कुम्भज की तीन कविताएँ

वे होंगे कुछेक ही फिर-फिर

वे होंगे कुछेक ही फिर-फिर
जो समर्थक या भक्त कहलाएंगे
और जो नहीं होंगे भक्त या समर्थक
दुश्मन क़रार दे दिए जाएंगे
वे, सुबह-सुबह काम पर जाएंगे
और जब शाम होने पर लौटेंगे घर
घर की जगह देखेंगे जो कुछ भी
उस सब से भीतर तक डर जाएंगे
डराएंगे वे कुछेक ही फिर-फिर
इधर से घुसेंगे, उधर निकल जाएंगे
उधर से घुसेंगे, इधर निकल आएंगे
और फिर उजालों में उजालों की तरह
देखते ही देखते ग़ायब हो जाएंगे
डंडे लहराएंगे, झंडे फहराएंगे,
चमकाएंगे तलवारें तमतमाते चेहरे लिए
कोई भी उनसे पूछ नहीं पाएगा सवाल
मलाल होगा सभी को होगा मलाल
दूध में दरार, पानी में प्रहार देखेंगे सब
लेकिन नहीं मुनासिब कुछ भी कर पाएंगे
जाएंगे, जाएंगे, सुलगती भट्टियों की तरफ़ जाएंगे
आह भर-भरकर आँसू बहाएंगे
समर्थक या भक्त होंगे जो भी
इन्हीं-इन्हीं लोगों की हँसी उड़ाएंगे फिर-फिर
और नाचते-गाते हुए ढोलक बजाएंगे
हराएंगे वे ही जो दुश्मन कहलाएंगे
वे होंगे कुछेक ही फिर-फिर.

सिर्फ़ सुनो, बोलो नहीं

सिर्फ़ सुनो, बोलो नहीं
और सच तो बिल्कुल भी नहीं
क्या आप जानते नहीं हैं
कि आप निगरानी में हैं?
मुनादी है कि बादल बरसेंगे
और प्यासे फिर-फिर तरसेंगे
मुनादी है कि रोटियाँ पेड़ पर लगेंगी
और भूखे फिर-फिर सपना देखेंगे
मुनादी है कि विकलांग दौड़ेंगे
और एवरेस्ट फ़तह कर लेंगे
आरामकुर्सी पर आराम करेंगे मगरमच्छ,
सभाओं में प्रवचन देंगे और आँसू बहाएंगे
नहाएंगे खून से साधू-संत, भद्र-अभद्र,
संगीतज्ञ होड़ मचाएंगे राग-दरबारी के लिए
कै करेंगे विचारक, हक़लाएंगे
लोहार सभी हो जाएंगे हलवाई
छोड़कर हुनर अपना जलेबियाँ बनाएंगे
फिर भी होंगी कहीं वे स्त्रियाँ भी होंगी
जो सुई में धागा डालती रहेंगी
सिर्फ़ सुनो, बोलो नहीं.

परदे सब हट गए

ये जो एक कोमल-सा क़िस्सा है
उसमें सचमुच थोड़ा-थोड़ा मेरा भी हिस्सा है
जिस तरह चुप हैं सब, चुप हूँ मैं भी
जिस तरह देख रहे हैं सब, देख रहा हूँ मैं भी
जिस तरह डर रहे हैं सब, डर रहा हूँ मैं भी
देख-देख हत्यारों के हाथों में धर्मग्रंथ
नाच जो हो रहा है, हो रहा है सड़कों पर ही
परदे सब हट गए या हटा दिए गए हैं
पत्ता-पत्ता काँप रहा है, हाँप रहा है
और यक़ीनन मैं भी.

तुम कैसी हो: मायावी सरोवर में डुबकी लगाती कहानियां

पुस्तक समीक्षा

सुनील जैन राही

समीक्षक

इस वर्ष के विश्व पुस्तक मेले में सुनील सक्सेना का कहानी संग्रह 'तुम कैसी हो' आया, उससे पहले उनका व्यंग्य संग्रह 'चोर मचाये शोर' मेरी टेबल पर आ चुका था । व्यंग्य के तीखेपन की तिलमिला देने वाली संवेदनाओं ने राहत की सांस भी नहीं ली थी कि उनका कहानी संग्रह हाथ में आ गया ।

व्यंग्यकार, कहानीकार और रंगमंच के मंजे हुए कलाकार की लेखनी में मानवीय संवेदनाओं के सैलाब की भरपूर उम्मीद थी, लिहाजा मैं कई बार उसमें बह गया । कहानी, उपन्यास में जिस तरह का चलन चल पड़ा है, अंत पाठक अपनी मर्जी से तय करे, लेकिन यहां ऐसा नहीं है, जो कुछ है खुला खेल फर्रूखाबादी है ।

'तुम कैसी हो' ये किसी सुमुखी से पूछूं मेरा बहुत मन करता है । लेकिन अपनी शकल और सफेद बालों के भय से पूछने के परिणाम दुष्परिणाम में बदल सकते हैं । कहानी तुम कैसी हो को पढ़ने के बाद ऐसा लगा, ये प्रश्न जरूर हर किसी को अपने आत्मीय से पूछना चाहिए । यह प्रश्न मनोभावना को छलकाकर जीवन में नया रस प्रवाहित करता है, एक नयी चेतना, उत्साह के साथ जीवन जीने की कला सिखा सकता है, नया सबक दे सकता है या फिर जीवन को फिर से उत्साह/उल्लास से भर सकता है ।

संग्रह की इस शीर्षक कहानी में मानवीय संवदेना अपने चरम पर है । जीवन की आपाधापी में इस वाक्य से 25 वर्ष के वैवाहिक जीवन में एक नया मोड़ आ जाता है और संबंध जीवंत हो उठते हैं नई शुरूआत के लिए । । हर कोई प्यार चाहता है, विशेष रूप से अपनों से सहानुभूति मिश्रित प्यार । इसके अभाव में जीवन नीरस-सा महसूस होने लगता है।

सुनील सक्सेना की कहानियों को पढ़ना, पीड़ादायक है । उनकी कहानियों में जीवन का वह पहलू नज़र आता है जिसमें आप अकुताकर झुंझला उठते हैं । कहानी के अंत तक विचलित हो जाते हैं, जल्दी से जल्दी कहानी समाप्त करने की उहापोह में किसे डांट दें कहा नहीं जा सकता ?

इस संग्रह में पच्चीस छोटी-बड़ी कहानियां हैं जो किसी एक विषय पर केन्द्रित नहीं है । जीवन के हर पहलू को उघाड़कर रख देने वाली कहानियों का गुलदस्ता है ये संग्रह । कोरोना में मरी हुई संवेदनाओं पर लिखी 'एक अंतहीन यात्रा' कहानी अंदर तक झकझोर देती है ।

'आठ सिक्के' कहानी में गरीब बच्चे की मजबूरी झलकती है । कड़कड़ाती ठंड में बच्चा नदी में छलांग लगाकर लोगों के फेंके पैसे निकाल कर लाता है कुछ तालियां बजाकर चल देते हैं तो कुछ वही सिक्के उसके हवाले कर आगे बढ़ जाते हैं ।

डांस बार कहानी में डांसबार गर्ल के जीवन के अधनंगे सच को बखूबी उकेरा है । अच्छी संवेदना में पले प्यार रूपी स्नेह की बौछार से भी भिगो जाती है ये कहानी ।

कहानियां केवल मनभावन की बात नही करतीं, सामाजिक कुरीतियों और उन पर सुधार की संभावनाओं की बात प्रेक्टिकल रूप में कर जाती हैं । विधवा विवाह जैसे जटिल प्रश्न का हल भी लिखा जाता है कहानी रंग दी कोरी चुनरिया में । कथानक कहीं से भी कोरी कल्पना नहीं लगता ।

यथार्थ को स्वीकार करने की बात कहानीकार करता है और उसमें उसका कलाकार मन, व्यंग्यकार की कलम और जीवन के अनुभव ठा...ठा मारकर जबरन घुस आते हैं, लेकिन पाठक को यह सब कुछ सहज लगता है । वह कहानी पढ़ता नहीं है, उसमें रम/डूब जाता है, खो जाता है, उसमें रचबस जाता है, निकलने की उम्मीद छोड़ देता है और कहानीकार सफल हो जाता है । पाठक गुड़ में चींटे की तरह लिपटा पड़ा रहना चाहता है।

संग्रह की कहानियां पुराने परिवेश में नहीं घूमती बल्कि वर्तमान में ''लिवइन'' की बात भी सलीके से करती है । नारी स्वतंत्रता के भाव में कब बेड़ियां धारण कर लेती है कोई नहीं जानता। मां-बाप को मूर्ख समझने वाले बेबस होने पर उनके कदमों में बिछ जाते हैं, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होती है । एक दरवाजा खुला रखो इस बात को दमदार तरीके से प्रस्तुत करती है ।

कहानी के विषय सामान्य जनजीवन से उठाये हैं । घटनाएं समाज के ताने-बाने पर आधारित हैं । भाषा बहुत सरस है। कहानी का मूल तत्व यानी दिमाग में चित्र का उभरना उसमें कहानीकार को महारथ प्राप्त है । रेनकोट कहानी में ''ममता'' की वह चरम सीमा है, जिसे लेखक छूने नहीं देता, बल्कि उसे आत्मसात करने पर मजबूर कर देता है।

मानवीय संवदेनाओं को उकेरने/उद्वेलित करने/विचलित करने/सोचने पर मजबूर करने और सजल नेत्रों को बरबस रोकने पर मजबूर करती कहानियां यथार्थ के जंगल में भटका देती हैं । झूट/फरेब से दूर जीवन की वास्तविकता से रू-ब-रू कराती कहानियां, कुछ नसीहत दे जाती हैं, तो कुछ चिन्तन के लिए मजबूर कर देती हैं।

फसलें और नस्लें ठीक से देखभाल न करो तो नष्ट हो जाती हैं जैसे संवाद सामाजिक बिखराव पर तीखा प्रहार करते हैं । ऐसे अनेक वाक्य हैं जो कहावतों की तरह सटीकता से प्रयोग हुए हैं । एक प्रश्न उभर कर आता है, क्या लिखने के लिए पूरी कहानियां या उपन्यास पढ़ना जरूरी है ? मेरी समझ में जो ऐसा करते हैं, वे इस कहानी संग्रह के लिए न करें । क्योंकि क्या छूट जाएगा पता नहीं ? कहानीकार के साथ अन्याय नहीं होगा, आप स्वयं अपराध बोध से ग्रसित हो जाएंगे । किसी भी कहानी को बीच में छोड़ा नहीं जा सकता और ना ही उसकी उपेक्षा की जा सकती है। अगर सच्चे पाठक हैं तो द्रवित हुए बिन नहीं रह पाएंगे ।

सुनील सक्सेना जी को बहुत बहुत बधाई। उनके अगले कहानी संग्रह का बेसब्री से इंतजार रहेगा।

पुस्तक - तुम कैसी हो
(कहानी संग्रह)
लेखक - सुनील सक्सेना
प्रकाशक- न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन
मूल्य - रू 225/-

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

सुब्रमण्यम और उनके भावयुक्त चित्रों का संसार

इंसान परिस्थिति बस कहीं पर भी रहने को मजबूर रहे या सज्ज रहे पर मन जन्मस्थली में पहुँच जाने को तड़पता ही रहता है। माँ, माँ ही होती है उसका स्थान कोई दूसरा नहीं ले सकता। उसका आपके जीवन में होना तब समझ में आता है जब वो हमारे बीच नहीं होती। हमारी कला के साथ भी कुछ ऐसा ही है। हमारी कला को भी ऐसे ही आगे बढ़ना चाहिए अपने माँ-बाप पुरखों के जुड़ाव के साथ। कला में परिवर्तन होते रहना चाहिए और हो भी रहा है पर थाती सहेजते हुए। ऐसे कई कलाकार हैं जिनकी कला वैश्विक स्तर पर छाई हुई है और सराही भी गई है। उन्हीं में एक कलाकार है जिनके रंग-रेखा एक दूसरे से भिन्न राह पर चलते हुए भी अलग-अलग अपने अस्तित्व को सम्हाल कर चलने में सफल हुए है। रंगों का ऐसा उठा पटक वो भी गम्भीर और हल्के हर मुद्दों पर, रेखाओं के साथ और अलग दोनों दशाओं पर इनके पहले शायद ही कोई कलाकार किया हो और ये कलाकार हैं के जी सुब्रमण्यम जिनका जन्म केरल के एक पण्डित परिवार में हुआ। सुब्रमण्यम शुरु में मार्क्स और गाँधी के विचारों से प्रभावित हो आगे बढ़ते रहे परन्तु जेल में रहते हुए अपनों से धोखा खा चुकने के बाद उनका ऐसे परिस्थितियों से मोहभंग हो गया जहाँ सिर्फ और सिर्फ वादे थे जो समय आने पर धराशायी हो चुके थे, सुब्रमण्यम विचलित हो उठे परिणामतः उनके कदम कला की ओर उन्मुख हो उठे। उनके इस निर्णय के पीछे कुछ हद तक सुपरिचित भारतीय कला आलोचक आनन्द कुमार स्वामी के लेख भी थे जिसके सम्पर्क में ये अभी-अभी आये थे। सुब्रमण्यम प्रयोगधर्मी थे फिर चाहे वो कला के क्षेत्र में हो या जीवन के गूढ़ से गूढ़, विषम से विषम परिस्थितियों में, उनका प्रयोग जारी ही रहता। बड़े जद्दोजहद के बाद इनका दाखिला शान्तिनिकेतन में करवा दिया गया जहाँ नन्दलाल बोस, रामकिंकर बैज और बिनोद बिहारी मुख़र्जी सरीखे महान कलाकारों का सानिध्य मिलते ही इनके व्यक्तित्व और कला दोनों में निखार आ गया पर संघर्ष निरंतर जारी रहा, रंग रेखा और भावों के बीच लगातार ये द्वंद्व मय रहे।

सैर कर दुनिया के गाफिल जिंदगानी फिर कहाँ,
जिंदगानी गर रही तो नौजवानी....

इस विचार से भी शायद इनकी सहमति बराबर बनी रही इनके भ्रमण और यात्राओं का ही असर है कि इनकी कला शुरु से ही सीमाओं से परे की कला रही है। पंक्षी, नदियां, पवन के झोंके कोई सरहद ना इन्हें रोके गीत का काफी असर दिखाई पड़ता है सुब्रमण्यम के जीवन में। ये आजाद पंक्षी की तरह सदा ही विचरते रहते थे तभी इनकी कला, काल परिस्थिति सरहद यहाँ तक कि माध्यमों से परे की कला थी तभी तो रेखांकन चाहे चारकोल से हो या वैसे भी, में रंग अपने मौलिक रुप में प्रयोग में लाया गया है, वो भी चटख और सपाट बिना किसी लाग लपेट के। शांतिनिकेतन के हिंदी भवन में विनोद बिहारी मुखर्जी के साथ म्यूरल बनाने या कहें सीखने का हल्का सा मौका क्या मिला म्यूरल में भी प्रयोग पे प्रयोग कर डाला गया इनके द्वारा जिसका प्रभाव लखनऊ के रविंद्रालय के बाहर लगभग 9 फिट ऊँचे टेराकोटिक म्युरल में देखा जा सकता है जिसकी लंबाई लगभग 81फिट है या फिर दिल्ली के गाँधी दर्शन म्यूरल में भी। सुब्रमण्यम बड़े ही लगन के साथ अपने कलाकृतियों में रमें रहते थे और पढ़ने पर, समझने पर भी ध्यान ज्यादा था इसके साथ ही कला के मनोवैज्ञानिक पक्ष पर भी इनकी अच्छी पकड़ थी। छात्रों को सिखाते समय भी हर बंधन से परे रखा इन्होंने ताकि बच्चे कला में कुछ अपना कर सकें। छात्रों से गम्भीर से गम्भीर मुद्दों पर बहस करना वो भी बिल्कुल ही सहज तरीके से इनके विद्वता की ही परिचायक थी।

अकबर पदमसी के शब्द अगर उधार लें कि बहुत मुस्कराना, जिसे हँसना कहते हैं वह सस्ता लगता

है या कह सकते हैं मौन जहाँ है वहाँ ज्यादा सम्वेदना और गरिमा है इनके चित्रों में भी हंसी जहाँ भी है हल्कापन ही महशूस कराती है साथ ही व्यंग्यता लिए है हास परिहास युक्त मुस्कान है जो एकबारगी अपने हल्केपन को खुद में समेटने का प्रयास भी करती है। इनकी अधिकतर कृतियाँ मौन हैं पर गम्भीर और संवेदनायुक्त हैं। मुखौटों की भी अधिकता है। चित्र अनइजी इन्टेरियर्स जिसमें गहरे और हल्के भुरे रंगों का प्रयोग बीच-बीच में आड़ी तिरछी रेखाओं के मध्य सफेद, बैगनी और नीले रंगों का मुखौटे में समा जाना वो भी कुछ व्यग्र रेखाओं के साथ, रंगों का टूटते हुए क्रम में प्रयोग भी अस्थिरताओं को जगह देती है। नारंगी रंगों का प्रयोग भी दर्शनीय है। चित्र में स्पष्ट आकार ना होते हुए भी व्यग्रता स्पष्ट है जो इनके चित्रों की विशेषता है। शुरुआती दौर में बंगाल शैली को इन्होने भी जीना शुरु किया था लेकिन जल्द ही अंदर की तड़प इन्हे इस मार्ग से विरत होने का आग्रह करने लगी और कुछ ही समय बाद इनके चित्रों में अपना अधिकार अपना स्ट्रोक, अपने विषय और अपनी शैली में दृष्टिगोचर होने लगे, माध्यम के साथ-साथ फलक पर प्रयोग भी जारी रहा फलत- कैनवस पर ही बंधे रहने की अपेक्षा प्लास्टिक सीट और एक्रेलिक सीटों पर भी काम करने का सिलसिला चल निकला। कहना गलत न होगा कि सुब्रमण्यम निर्मल जल की तरह बहते हुए अपनी कला यात्रा की है। रास्ते में जो भी रंग, गुण, पदार्थ मिलता गया अपने में आत्मसात करते गये पर अपने जल होने के अस्तित्व के साथ, तभी तो स्लेड स्कूल ऑफ आर्ट, लंदन जहाँ 1955-56 में जाने के मौके के बाद लगभग 57 से लेकर 61 तक हैन्डलूम बोर्ड मुंबई में बिताने के बाद इनके चित्रों में सामाजिक मिथकों का भी समन्यव रुप दिखाई पड़ने लगता है और बच्चों के खिलौने जो इन्होंने खेल-खेल में बनाए होंगे एक बार फिर से बालपन को समझने के मौके को हथिया लिया इसी बहाने। बच्चों के लिए इलेस्ट्रेशन बनाए कहानियाँ भी लिखी इन्होंने। मध्ययुगीन लघु चित्रण, पत्थर गुफाओं में अंकित जनजातीय भित्ति चित्रण से रंग-रेखाओं को उसी अंदाज में कुछ चटकता के साथ उठाना, लोक कलाओं को चारकोल और चटख रंगों में पिरो देना, टेक्सटाइल स्टाइल को नये अंदाज़ में अपने चित्रों में समाहित कर लेना एक नये सिद्धांत के जनक तो आप खुद ही हो गये हैं लेकिन पूर्व के कुछ विद्वान जो आपके चित्रों में इन सभी विशेषताओं के साथ ही यह भी मानते हैं कि भारतीय शिल्प के साथ पाश्चात्य के विविध सिद्धांत आपके कला में समायोजित है को मैं भी मान लेता हूँ पर मज़े की बात यह है कि अंतर्मन मानने को तैयार नही हैं। आपके विषय भी अपने और सिद्धांत भी अपने ही हैं आपकी यात्राएँ ही आपके विचारों आपके नजरियें में सागर सी अथाह गहराई के कारण हैं। इनकी अधिकतर कृतियाँ अशीर्षक ही रही हैं मतलब साफ है कि ये दर्शक को भी अपने स्तर पर सोचने को स्वतन्त्र छोड़ देते थे बंधन और सीमाओं से परे। रक्तिम आँखों के बीच हरी-हरी पुतलियां नष्ट हो चुके परिवेश में भी उम्मीद की किरण साबित हुई हैं। स्त्री पुरुष विनोद में भी व्यंग्य साफ झलकता है। कठपुतली जैसे चेहरों से भी भाव झलक रहा है। ब्रश स्ट्रोक लगभग हर कमियों पर भारी है। इनके अधिकतर चित्र परिप्रेक्ष्य विहीन से लगते हैं पर भाव और खूबसूरती में कहीं से भी बट्टा नही लगता। और अंत में उनके ही शब्दों में कहें तो चित्रकृति ऐसी हो जो गूँजती रहे। स्मृति में बनी रहे। इस आशा के साथ कि सुब्रमण्यम की कलाकृतियाँ भी सभी के ज़ेहन में सदा बसी रहेंगी। आज जबकि वो हमारे बीच नही हैं अपने कृतियों के साथ हमारे और आपके बीच रहेंगे।

सगुण उपासना का शिखर

श्री जगन्नाथ रथ यात्रा

डॉ. गरिमा संजय दुबे

यह माह जगन्नाथ रथ यात्रा का माह है, जगन्नाथ वह चैतन्य सत्ता है जो शयन पर जाने के पूर्व रथ से यात्रा कर अपने ही रचे संसार की व्यवस्था देखने निकलती है 'सब मनिसा मोर प्रजा'। अब सत्ता महादेव को सौंप श्रीहरि शयन के लिए प्रस्तुत हैं। वह योगेश्वर योगनिद्रा में जाने के पूर्व अपने सभी मानवीय गुण के साथ संसार को अपने होने की अनुभूति देता है।

सगुण उपासना की धारा के सौंदर्य प्रतिमान विलक्षण हैं, ईश्वर कोई बहुत दूर की सत्ता नहीं है उन साधकों के लिए जो सगुण उपासक हैं, वे किसी अज्ञात प्रकाश को अनुभूत करने के लिए किसी कंदरा में जाकर साधना नहीं करते, वे संसार में रहकर, संसार के कर्तव्य बंधनों से जुड़कर भी परमात्मा को पाने का जतन करते हैं। निर्गुण सबसे कहां सधता है, श्रीकृष्ण जो पूर्ण अवतार कहे जाते हैं, उनका संपूर्ण जीवन, और उनके भक्तों का जीवन सगुण भक्ति का ही आख्यान है, वे गोपियां हो, श्री राधा हों, मीरा या सूरदास या अन्य कोई सभी सगुण उपासक हैं, हां वे सगुण से निर्गुण को पा लेते हैं, वे उस परम तत्व को नही नकारते किंतु इस संसार को भी सच मानते हैं-

निर्गुन कौन देस को बासी?
मधुकर ! हँसि समुझाय, सौंह दै बूझति, साँच, न हाँसी॥
को है जनक, जननि को कहियत, कौन नारि, को दासी?
कैसो बरन, भेस है कैसो केहि रस कै अभिलासी॥
पावैगो पुनि कियो अपनो जो रे ! कहैगो गाँसी॥
सुनत कौन ह्वै रह्यो ठग्यो सो सूर सबै मति नासी॥

आचार्य शंकर भले ही 'ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या' की अवधारणा बताते हो, किंतु उसी ब्रह्म की अभिव्यक्ति मनुष्य है यह भी तो कहते हैं 'अहम ब्रह्मासमी'। परमात्मा और जीव जगत के अद्वैत का सिद्धांत भी तो प्रकारांतर से सगुण को बल देता है।

संसार परमात्मा की अभिव्यक्ति है संपूर्ण गुणों के साथ, ब्रह्मांड का हर गुण मनुष्य में है, तो यह सगुण की ही बात है न।

भगवती गंगा को देखकर गंगा स्त्रोत, वन में एक स्त्री से भोजन पाने पर अन्नपूर्णा स्त्रोत रचने वाले आदि शंकराचार्य, उसी ब्रह्म की स्थूल अभिव्यक्ति इनमें जब देखते हैं तो क्या वे सगुण को मान्य नहीं करते हैं ?

यूं भक्ति की दोनों धाराओं का अपना महत्व है, इसे प्रतिपादित करने वालों के मन में कोई द्वंद नहीं था, वे जानते हैं आत्म उत्थान, आत्म साक्षात्कार, संसार को दृष्टि देने के लिए कुछ को उस परम तत्व को जानना होगा, यह मार्ग सबके लिए न सुलभ है न सहज। और संसार के आनंद के लिए कुछ को उसे मानना होगा।

निर्गुण रूप में उसके संपूर्ण विश्व में व्याप्त प्रभाव को देखना होगा जिसे सगुण रूप में यह संसार पूजता है। सगुण के पीछे छुपे उस निर्गुण को अनुभव में लाने के लिए उच्च स्तर के साधक निर्गुण की साधना करते हैं।

संसार में रहकर निर्गुण की साधना कैसे हो, ब्रह्मांड सगुण है, उसे रचने वाला निर्गुण कैसे हो सकता है।

संसार का संचालन भी तो एक कर्तव्य है इसलिए संसारी गृहस्थ सगुण उपासना का मार्ग चुनते हैं। वे सगुण से निर्गुण तक पहुंचते हैं, न भी पहुंचे तो सगुण साधना भी उनका अभीष्ट पूरा करती है।

निर्गुण धारा सिद्धों का साधन है, सगुण संसारियों की, यह कोई स्थापित सत्य तो नहीं किंतु सामान्य अनुभव से यह समझ आता है कि निर्गुण को साधने के जतन संसारी कहां से जुटाए, संसार के प्रपंच उसे सगुण में सहजता देते हैं यद्यपि मन बुद्धि चेतना के स्तर पर वह निर्गुण को साध सकता है तथापि यह राह थोड़ी दुरूह है।

किसी बालक को बिना कोई रूप दिखाए कहा जाए कि यह तुम्हारी माता है, वह चकित, भ्रमित भाव से इधर उधर देखेगा, हो सकता है हंसने लगे कि कहां है माता, कोई रूप तो हो। मनुष्य जब संसार में जन्म लेता है तो रूप आकार स्पर्श से ही संसार को जानता है, इसलिए अशरीरी उपस्थिति को बताकर कोई बालक को कहे इसे माता मानकर उसे प्रेम करो, तो वह बालक उस अदृश्य रूप से एकाकार नहीं हो पाएगा, उसे मां दिखाई देनी चाहिए, स्थूल शरीर रूप में, अशरीरी कल्पना को मान वह मां के प्रति अपने भाव जागृत नहीं कर सकता, संसार के सामान्य भक्त उसी बालक की श्रेणी के हैं, जिन्हें ईश्वर का कोई विग्रह चाहिए जहां वे अपनी चेतना को केंद्रित कर सकें। एक बार स्थूल रूप में चेतना के केंद्रित होने पर सूक्ष्म तक की यात्रा की संभावना हो सकती है किंतु बिना रंग, रूप, स्पर्श, गंध के वह प्रेम से नहीं जुड़ पाता। इसलिए संसार भर के धर्मों में किसी न किसी रूप में विग्रहों को पूजे जाने का प्रचलन है और उन सबमें भी सनातन संस्कृति मनुष्य को अपने मन के विग्रह के चयन की स्वतंत्रता देती है। जहां जिस रूप में, जिस तरह भाव केंद्रित हों वहां अपनी चेतना और भाव का निवेश कर, किसी तरह परम तत्व से जुड़ अपने आत्म उत्थान व संसार के उत्थान की चेष्टा कर। अपने आदर्श रूप में विग्रहों के आग्रह का यही कारण है, बाद में उसमें कर्मकांड प्रधान हुआ और उसमें कोई विकृति आई हो तो इसे मनुष्य की बुद्धि, संस्कार का दोष कहना चाहिए, पूरी परंपरा को दोषी ठहराने के कुतर्क से बचा जाना चाहिए।

यदि सगुण उपासना के उपादान देखें तो सगुण भक्ति में ईश्वर हमारी ही तरह मनुष्य रूप में पूजा जाता है, वह कभी बालक के रूप में ,कभी किशोर के रूप में, कभी युवा, कभी वृद्ध और इन सबमें सभी संसारी संबंधों में गति करता हुआ पूजा जाता है। सनातन संस्कृति में ईश्वर मनुष्य को तरह हर भाव को पोषित करता है, वह पुत्र, पिता माता पुत्री,पति पत्नी, भाई, संबंधी सब तरह के संबंधों का निर्वहन करता है। वह दुःखी भी होता है, प्रसन्न भी, क्रोध भी मोह भी, राग भी। जब तक स्वयं उन भावों का अनुभव नहीं करेगा ईश्वर तो संसार में उन भावों के प्रभाव को कैसे जानेगा। इसलिए ईश्वर शबरी की तरह पहले प्रत्येक भाव स्वयं चखता है फिर संसार के भाव समझता है। तभी तो जगन्नाथ अपने बलराम भैया सुभद्रा बहिन के साथ अपनी मौसी के यहां जाते हैं, वे हमारी ही तरह संबंधों में हैं और संबंधों के निर्वहन का ज्ञान देते हैं।

सगुण भावधारा में एक मनुष्य की तरह उसके स्नान, श्रृंगार, भोजन, शयन की चिंता करते करते कब भक्त अपने संसार के सारे कार्य में प्रबंधन कुशलता पा लेता है पता ही नहीं लगता। मेंहदी पीसने वाले के हाथ रंग लगता है, पुष्प तोड़ने वाले के हाथ सुगंध ठीक वैसे ही ईश्वर के श्रृंगार का जतन हमारे भीतर के सौंदर्यबोध को विकसित करता है, उसके लिए पकाए जाने वाले भोजन प्रसाद का स्वाद हमारे अपने भोजन में उतरने लगता है, उसके शयन की शांति हमारी निद्रा को स्थिर करती है, उसके रोग के निदान का जतन हमारे स्वास्थ्य को पुष्ट करता है, उसे अर्पित किए जाने वाला अर्घ्य/प्रसाद हमारी क्षुधा पूर्ति करता है, उसके समक्ष दीप प्रज्वलित करने वाला भाव हमारे जीवन को आलोकित करता है, ईश्वर इनमें से अपने लिए कहां कुछ लेता है इस बहाने वह देता ही है। यह स्वाभाविक प्राप्ति है साधना प्रार्थना की इसलिए सगुण को पूर्ण भाव से साधने में कैसा संकोच।

जगन्नाथ यात्रा तो सगुण भक्ति का शिखर है, जो इस भाव को नहीं समझते वे उस रस से भी वंचित रहेंगे जो सगुण भक्ति में बरसता है। सूरदास को सगुण उपासक कहते हैं मर्मज्ञ, मुझे उनसे बड़ा निर्गुण कोई नहीं दिखता जिसने जन्म से कोई विग्रह देखा ही न हो और वह ऐसा सजीव वर्णन कर दे, इसका अर्थ यह है कि उनकी निर्गुण चेतना कितनी उर्ध्वगामी होगी जो बिना स्थूल का ज्ञान पाए सूक्ष्म रूप से भी श्रीकृष्ण को आकार दे सकी। उनकी चेतना निर्गुण थी अपने सूक्ष्मतम रूप में इसलिए वह गुणधर्म देख सकी। निर्गुण भी अपनी उच्चतम अवस्था में एक रूप का साक्षात्कार करता है और सगुण अपनी उच्चतम अवस्था में प्रकाश का। 'सगुनहि अगुनहि नहीं कछु भेदा' भेद तो बुद्धि ने डाल दिया, जो भावजगत में विचरण करते हैं उन्हें तो किसी में भेद दिखाई ही नहीं देता, वे तो अद्वैत साध चुके होते हैं। भेद बुद्धि का कार्य है, भाव तो अभेद है। शिव से बड़ा निर्गुणी कौन, किंतु उनकी सगुण साधना देखिए कैसी उच्चतम, संसार का हर भाव निभाती हुई।

तो जगन्नाथ यात्रा सगुण भक्ति का शिखर है जहां बड़े से बड़ा निर्गुणी भी आश्रय पाता है।

जगन्नाथ का चैतन्य तत्व स्पंदित होता रहता है, उसी स्पंदन में मानवीय गुणों के आह्वान से और भक्तों के भाव से, जैसे एक शिशु बरसात में भीग कर पीड़ित होता है ईश्वर भी अपनी लीला से रोगी होने का स्वांग रचते हैं, भक्तों के वत्सल भाव को बल देने को शिशुलीला कर जगन्नाथ रोगशैय्या पर पड़े रहते हैं, और इस संसार के चिकित्सक उनकी चिकित्सा कर धन्य धन्य अनुभव करते हैं।

यहां दो बाते हैं, एक सेवा का भाव प्रबल हो, जैसे प्रभु की सेवा करते हो वैसे ही अपने संसार में सेवा का भाव बना रहे मानव मात्र के लिए। सेवा धैर्य सिखाती है, संयम सिखाती है। जिन्होंने अपने घर के वृद्धों की सेवा की है उनके भाव की स्थिरता देखिए, वे कुछ अधिक स्थिर होते हैं, सामान्य कठिनाईयां उन्हें विचलित नहीं करती। बालक और वृद्धों के पालन पोषण से आपके धैर्य की परीक्षा होती है, उनके हठ और क्रोध से आपके संयम की, धर्म यही तो सिखाता है न। रोगी की सेवा कोई हंसी खेल तो नहीं, तो अपने रोग से जगन्नाथ जरा परीक्षा लेते हैं भक्तों की, श्री हरि यूं भी कौतुक प्रेमी तो कौतुक बिना कहां ठौर।

दूसरा पक्ष देखें, जगन्नाथ जो जगत के नाथ हैं, जगत के चिकित्सक हैं, उनकी चिकित्सा ये संसार कर पाएगा क्या, जिनके नाम स्मरण से भव सागर, रोग प्रकोप सब तर जाएं उनके लिए संसार के ये चिकित्सक क्या करेंगे, किंतु वे श्री हरि हैं, अपनी उदारता से मनुष्य के अहंकार को संतुष्ट करना वे जानते हैं। जैसे कभी कभी बालहठ के आगे माता पिता कोई खेल हारकर बच्चे को विजेता होने का भाव दे देते हैं, वैसे ही जगत के तारणहार अपने रोग निवारण के लिए इन चिकित्सकों के अहंकार को पुष्ट करते हैं, कि देखो हम ईश्वर की चिकित्सा करते हैं। सुना है जो चिकित्सक श्री जगन्नाथ की चिकित्सा करने आते हैं वे रो पड़ते हैं क्योंकि उन्हें यह आभास हो जाता है कि जो सबकी पीड़ा हरने वाले हैं उनकी पीड़ा हम कैसे हरेंगे, यह कैसी उलटबांसी है कि संसार का कोई क्षुद्र प्राणी श्री हरि की चिकित्सा करे, किंतु कौतुक है तो है,

वे चिकित्सक उनके इस उदार कौतुक पर प्रसन्नता में रो पड़ते हैं कि हमें चुना गया इस कार्य के लिए, इस भाव को समझने के लिए जिस भाव की आवश्यकता है वह बुद्धि कहां से लाए इसलिए कुतर्क गढ़ती है। श्री हरि मंद मंद मुस्कुराते हुए लीलारत है,अपने ही बनाए संसार में स्वयं एक पात्र बनकर वही तो आते हैं।

विचार करती हूं कि यदि सगुण उपासना न होती तो क्या होता, ये जो सुंदर श्रृंगार हैं, जो स्वादिष्ट पकवान हैं,आभूषण हैं, पूजन सामग्री है, कलात्मक अभिव्यक्तियां हैं वे कहां होती, संसार का यह सौंदर्य सगुण से तो है, जो सब निर्गुण हो जाते तो किसे पूजते, किसे खिलाते, किसे सजाते, किसे सुलाते,

वहां तो केवल अपने उत्थान का जतन होता और आंख बन्द कर सब ध्यान ही लगाते रह जाते और अपने अपने आनंद में डूबे रहते किसी को किसी से कोई प्रयोजन ही नहीं होता।

किसके लिए इतने सौंदर्य उपादान होते, भगवान के वस्त्र देखिए, उनके आभूषण देखिए, चंदन अबीर गुलाल कुमकुम के रंग देखिए, कर्पूर और धूप की सुवास अनुभव कीजिए, कितने कितने सुंदर। जो यह न होते तो कला की समस्त अभिव्यक्तियां क्या होती, किसके लिए मंत्र श्लोक का उच्चारण होता, किसके भजन लिखे जाते, किसके लिए नृत्य की भंगिमाएं होती, किसके लिए राग रागिनी होते और किसके लिए वाद्य यंत्र होते, सगुण से कला के समस्त आयाम सौंदर्य पाते हैं, इन सब आयामों का अनुभव करते करते किसी दिन भाव सगुण से निर्गुण में स्थित हो जाए तो अभीष्ट सिद्ध हो। मेरे अपने विचार में निर्गुण की राह सगुण से होकर जाती है, सगुण वह बीज है जिससे निर्गुण रूपी फल की प्राप्ति होती है इसलिए बड़े से बड़े साधक भी सगुण को नहीं त्यागते।

निर्गुण की अनुभूतियां तो गूंगे के गुड़ की तरह हैं, हैं भी गूढ़ तो अभिव्यक्ति की नहीं जा सकती, सगुण अभिव्यक्ति प्रधान है यहां हर भाव बिना अभिव्यक्ति के सम्पन्न नहीं हो सकता तो संसार की समस्त कलात्मक, रागात्मक, सौंदर्यवान, रससिक्त अभिव्यक्तियां सगुण की देन हैं। काष्ठ निर्मित अधूरी मूर्तियां पूर्ण प्राणवंत हैं, पूर्णता प्रदान करने वाली सगुण भक्त हो या निर्गुण, वहां पूर्णता ही फलश्रुति ही।

प्रकृति ने या श्री हरि ने संसार के संचालन के लिए इसलिए बुद्धि में यह दोनों भाव डाल दिए। जिससे जो सधे, दोनों का अपना महत्व, दोनों का अपना सौंदर्य। किन्तु स्थूल नयन पहले स्थूल का ही आभास पाते हैं फिर धीरे से सूक्ष्म की और यात्रा करते हैं। तो जगन्नाथ यात्रा के मर्म को समझना हो तो सगुण भक्ति के यह सुंदर भाव देखिए, निर्गुण सध सके तो साधिए किंतु सगुण का उपहास न कीजिए।

सगुण का उपहास करके तो निर्गुण भी साधा न जा सकेगा, सगुण को नकार कर निर्गुण को कोई साध पाएगा यह वस्तुतः बहुत बड़ा भ्रम है, श्री हरि जगन्नाथ मनुष्य के मन के इस भ्रम का निवारण करे।

फर्ज से जी चुराने की पराकाष्ठा

इंदौर महाजाम

आरबी त्रिपाठी

लेखक स्तंभकार हैं।

शुक्रवार 27 जून को दोपहर साढ़े तीन से चार बजे के बीच हम देवास से इंदौर के लिये कार से जा रहे थे। जैसे ही क्षिप्रा नदी का पुल क्रास कर आगे बढ़े कि एबी रोड पर जो नजारा देखने को मिला उससे एकाएक चौंक गये। इस महत्वपूर्ण रोड पर बाँये यें हाथ की सड़क पर दो-दो तीन-तीन रो में वाहनों की लंबी लाइनें लगी हुई थी। ज्यादातर भारी भरकम लदे बड़े ट्रक, बीच में यात्री बसें तथा कारें आदि वाहन। पहले तो लगा कि शायद किसी दुर्घटना की वज़ह से या किसी भारी वाहन के बीच रोड पर पलटने से इतना लंबा जाम लगा होगा जिसे क्लियर करने की मशक्कत की जा रही होगी। लेकिन थोड़ा आगे आने पर इंदौर से एक मित्र का मैसेज देखा कि यह जाम 20 घंटे से भी ज्यादा समय से लगा पड़ा है और जाम का असर सड़क के दोनों तरफ है।

हम थोड़ा संभलते तब तक समझ आ चुका था कि आखिर इतनी बड़ी संख्या में वाहन क्यों फसे हैं। बड़ी वाहन तो ठीक लेकिन कारें, एम्बुलेंस में उपचार के लिये ले जा रहे मरीज और बसों में सफर करने वाले यात्री परेशान हाल दिखाई दिये। शायद ही कोई खाने पीने का इतना सामान केरी करता होगा कि घंटों जाम में फसने पर भी दिक्कत पेश ना आये। कुछ ही मिनट बाद हमारे- आगे पीछे भी इंदौर की तरफ एक-एक कर वाहन रेंगते हुए चल रहे थे। पता चला कि ऐसा महाजाम, महा विकास के चलते चल रहे निर्माण कार्यों की वज़ह से लोगों को भुगतना पड़ रहा है। पता चला कि अर्जुन बड़ोद के फ्लाय ओवर, इंदौर-उज्जैन रोड के चौड़ीकरण और मांगलिया के नजदीक आर ओ बी के काम के चलते यह विषम स्थिति निर्मित हुई है। हाल की बारिश ने इसे और ज्यादा ज्वलंत समस्या बना दिया। विकास का यह स्वरूप मुबारक हो।

पहले फोरलेन, फिर सिक्स लेन और अब जगह-जगह आरओबी, ओवर ब्रिज या नई तरह की इंजीनियरिंग के नायाब नमूने के तौर पर कोई और निर्माण कार्य जारी है। विकास कार्य ना तो कभी समय पर पूरे हो सकते हैं और ना बारिश या विपरीत मौसम में रुक सकते हैं। भले ही इससे आम लोगों, यात्रियों, वाहन चालकों को कितनी भी मुश्किलों का सामना क्यों ना करना पड़े, उनकी बला से। संबंधित विभाग, इंजीनियर, ठेकेदार और इन सबके बीच बड़ी बड़ी आधुनिक मशीनें और थोड़े बहुत श्रमिक। उधर उज्जैन में सिंहस्थ कुंभ को भी अधिक समय नहीं है उसकी भी तैयारी का तर्क दिया जा सकता है। भले ही बारिश की वजह से सड़कें गड्ढों में तब्दील हो जाये और असलियत सामने आ जाये।

हद दर्जे की अनदेखी और लापरवाही की इंतहा देखिये कि ना तो देवास से इंदौर आते वक्त और ना इंदौर से देवास जाते समय कहीं भी कोई सूचना, बैरिकेडिंग या कोई संकेत प्रदर्शित किया गया कि आगे घंटों जाम लगा हुआ है? कोई जिम्मेदार नहीं, कोई पुलिस या ट्राफिक पुलिस नहीं यहां तक कि होम गार्ड भी नहीं कि बता सके कि आगे वाहन ले जायेंगे तो फसकर रह जायेंगे। यहीं से लौट जाइये यही बेहतर होगा।

एक- दो दिन पहले ही इंदौर में भारी बारिश हुई थी। इंदौर- भोपाल हाइवे पर एक प्रायवेट कंपनी द्वारा सड़क के किनारे जेसीबी द्वारा खुदाई कर विकास का काम चल रहा है। इससे मुख्य सड़क पर दूर-दूर तक काली मिट्टी और कीचड़ से फिसलन की स्थिति उत्पन्न हो गई है। फोर व्हीलर तो फिर भी ठीक लेकिन टू व्हीलर वाहनों के लिये फिसलने का खतरा है।

ऐसे में हमारे एक सहयोगी रात 8 बजे इंदौर से भोपाल के लिये चार्टर्ड बस में बैठे लेकिन वैकल्पिक रास्तों से इंदौर से निकलकर रुक-रुककर यह बस रात को ढाई तीन बजे भोपाल पहुंची। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि प्रदेश की राजधानी से व्यावसायिक शहर को जोड़ने वाली रोड और यातायात की बीते कुछ घंटों में क्या हालत रही होगी। शनिवार की सुबह उन्होंने अपनी आपबीती सुनाई। यह सिर्फ एक उदाहरण भर है। बड़ी संख्या में लोग परिवार समेत, मरीज उपचार के लिये तथा गंभीर हालत के मरीज एम्बुलेंस से इस रोड पर आते-जाते हैं जिन्होंने इस दुरावस्था को झेला होगा।

जब यह सब चल रहा था तब जिम्मेदार प्रशासन और उसके आ ऑफिसर इस अचानक उत्पन्न आफत से निपटने को मीटिंग में मशगूल थे। होना यह चाहिये था कि संबंधित जिम्मेदार मौके पर जाकर ट्राफिक के सुचारु संचालन में अधीनस्थ अमले की मदद करते। तभी बेकसूर लोगों, मरीजों (संख्या कितनी भी हो) की जान बचाई जा सकती थी। इस स्थिति में सुधार हो भी गया हो तब भी यह अक्षम्य लापरवाही कही जायेगी।

सांदीपनि शासकीय कृषि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैतूल बाजार के नवनिर्मित भवन का भव्य शुभारंभ

41.77 करोड़ की लागत से बने भवन से विद्यार्थियों को मिलेगी सर्वसुविधायुक्त शिक्षा की सौगात

बैतूल। सांदीपनि शासकीय कृषि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैतूल बाजार के नवनिर्मित भवन का शनिवार को भव्य शुभारंभ कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि बैतूल विधायक हेमंत खंडेलवाल, मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष मोहन नागर, सुधाकर पवार, नगर परिषद अध्यक्ष बैतूल-बाजार श्रीमती दुर्गावती वर्मा एवं उपाध्यक्ष सुरेश गायकवाड़ सहित अन्य जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में नवनिर्मित भवन का भव्य शुभारंभ किया गया। शुभारंभ कार्यक्रम में विधायक हेमंत खंडेलवाल ने कहा कि यह भवन विद्यार्थियों

के लिए शिक्षा की नई राह खोलने का काम करेगा। हम चाहते हैं कि इस विद्यालय के छात्र-छात्राएं हर क्षेत्र में उच्चतम स्थान प्राप्त करें। मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के उपाध्यक्ष मोहन नागर ने इस मौके पर कहा कि इस विद्यालय के सभी कक्षों के नाम महापुरूषों के नाम पर रखा जाए, ताकि विद्यार्थी भारतीय इतिहास से परिचित हो सके। उन्होंने शैक्षिक विकास के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि नई सुविधाओं से छात्रों को न केवल बेहतर शिक्षा मिलेगी, बल्कि उनका समग्र विकास भी होगा। उन्होंने बताया कि नवनिर्मित भवन में विद्यार्थियों को अध्ययन के साथ-साथ अन्य सहायक गतिविधियों के लिए भी सुविधाएं प्राप्त होंगी। यह भवन आधुनिक तकनीकी सुविधाओं से लैस है, जो विद्यार्थियों को बेहतर शिक्षा और सीखने का माहौल प्रदान करेगा। श्री सुधाकर पवार ने शाला के इतिहास की जानकारी प्रदान की। नगर परिषद अध्यक्ष बैतूल बाजार द्वारा विद्यार्थियों को इस अवसर पर शुभकामनाएं प्रदान की। इस दौरान अन्य अतिथियों द्वारा भी कार्यक्रम को संबोधित किया गया। संस्था प्राचार्य द्वारा शाला में संचालित समस्त गतिविधियों व विगत तीन वर्षों का परीक्षा परिणाम एवं अन्य उपलब्धियों की जानकारी दी गई।

विद्यालय परिसर में किया पौधारोपण- सांदीपनि शासकीय कृषि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बैतूल बाजार के नवनिर्मित भवन के शुभारंभ कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथियों ने एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत विद्यालय परिसर में पौधारोपण कर सभी को पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। इस अवसर पर नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती दुर्गावती वर्मा, उपाध्यक्ष सुरेश गायकवाड़, जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुर्वे, जितेन्द्र वर्मा, नरेंद्र शुक्ला, संजय वर्मा, राधिका वर्मा, सुनील पवार, जिला शिक्षा अधिकारी डॉ.अनिल सिंह कुशवाह, पीआईयू के अधिकारी और अन्य शिक्षा विभाग के अधिकारी, कर्मचारी, संस्था के सभी शिक्षक-शिक्षिकाएं सहित अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। मंच संचालन आरके पिंजारे, पुरूषोत्तम देशमुख एवं आभार अभय जोशी ने व्यक्त किया।

ट्रांसफॉर्मर के खुले डिस्ट्रीब्यूशन बॉक्स बन सकते है हादसों का कारण

लापरवाही - बिजली तारों में दौड़ते करंट को लेकर विभाग बेपरवाह

संजय द्विवेदी, बैतूल। बिजली जैसे संवेदनशील मामलों में भी विभाग लापरवाह है। यह स्थिति तब है, जब बारिश का मौसम चल रहा है और ट्रांसफॉर्मर के नीचे लगे फ्यूज स्विच डिस्ट्रीब्यूशन बॉक्स को व्यवस्थित रूप से बंद तक नहीं किया गया है। जिससे खतरा बढ़ गया है। खासकर मवेशियों के लिए खुले फ्यूज स्विच और डिस्ट्रीब्यूशन बॉक्स जानलेवा भी साबित हो सकते है। दरअसल शहर में 550 से अधिक ट्रांसफॉर्मर लगे हैं, जिसके नीचे फ्यूज स्विच के लिए डिस्ट्रीब्यूशन बॉक्स लगाए हैं, लेकिन इन्हें व्यवस्थित रूप से बंद तक नहीं किया गया है। कहीं बॉक्स खुले पड़े हैं तो कहीं टूटे हुए लटक रहे हैं। कुछ जगह पर तो बॉक्स जमीन से कुछ ऊपर कम ऊंचाई में लगा दिए हैं, जिससे बारिश के दौरान शॉर्ट-सर्किट होने से विद्युत पोल में करंट आने का खतरा बनता रहता है। लाइन सुधारने के दौरान भी बिजली कर्मचारी इन बॉक्स को वैसे ही छोडक़र चले जाते है। कहीं-कहीं फ्यूज बाक्स की ऊंचाई 2 से 3 फीट तक ही है। इससे मवेशियों और यहां से निकलने वाले रहवासियों को करंट लगने का डर लगा रहता है। लोगों का कहना है कि बिजली के खुले तार बेहद खतरनाक है। बिजली कर्मचारियों द्वारा भी इन्हें व्यवस्थित नहीं किया जाता है। जबकि कई बार इन तारों के संपर्क में आने से मवेशियों की मौत तक हो चुकी है।

बिजली मेंटनेंस में भी केवल औपचारिकता- कंपनी द्वारा प्रतिवर्ष बिजली लाईनों का मेंटेनेंस किया जाता है। लेकिन यह कार्य भी मात्र औपचारिकता तक सीमित है, जबकि स्थिति जस की

तस नजर आती है। बिजली खंभो पर तारों का जाल, झूलते तार को कसा तक नहीं जाता। ऐसे में फाल्ट आने पर लोगों को घंटो तक अंधेरे में रहना पड़ता है। बिजली खंभों पर तारों के जाल के कारण कर्मचारियों को खुद समझ नहीं आता है कि कौन से तार किसका है। कर्मचारी अंदाजे से ही सुधार करते है। इसके बाद भी बिजली कंपनी के अधिकारियों द्वारा लाइनों को व्यवस्थित करने की कार्रवाई नहीं की जा रही। इससे बिजली के तार और ट्रांसफार्मर गंभीर हादसे का कारण बन सकते है।

लोगों के दिलों में बढ़ रहा डर - कई बार बिजली तारों में स्पार्किंग के कारण आतिशबाजी की तरह चिंगारियां निकलती है। इससे लोगों के दिलों में बिजली का डर बना हुआ है। लोगों ने बताया कि तार बार-बार टूटने के कारण जर्जर हो चुके हैं। इन तारों में कई जोड़ लगाकर बिजली की सप्लाई की जा रही है। खुले तार जब हवा के कारण आपस में टकराते है, तो आतिशबाजी की तरह चिंगारियां निकलती है। इससे दुर्घटना का डर बना रहता है। कई स्थानों पर बिजली के तार मकानों से सटकर गुजरे है। वहीं ट्रांसफार्मरों की ऊंचाई भी कम है। लोगों का आरोप है कि बिजली विभाग द्वारा कुल मिलाकर अनदेखी की जा रही है। इससे भविष्य में बड़ा हादसा हो सकता है।

बिजली उपकरण बदलने पर नहीं देते जोर

विद्युत कंपनी द्वारा फ्यूज स्विच, डिस्ट्रीब्यूशन बॉक्स सहित उपकरण बदलकर नया लगाने पर जोर नहीं दिया जाता है, बल्कि उन्हीं उपकरणों को जैसे-तैसे जुगाड़ लगाकर दोबारा फीट कर दिये जाते है। जानकार बताते है कि पॉवर सप्लाई ट्रांसफार्मर का डिस्ट्रीब्यूशन बॉक्स क्षमता के अनुसार लगाया जाता है। एक बॉक्स 15 से 20 हजार रुपए में आता है। सामान्य तौर पर पुराने बॉक्स को रिपेयरिंग करने की नौबत अधिक रहती है। कंपनी को कभी 2 तो कभी 4 बॉक्स की आपूर्ति होती है, जिसे अधिक जरूरत वाले स्थानों पर लगाते हैं। आपूर्ति होने पर बॉक्स लगाते हैं। लिंक रोड पर ममता अस्पताल के सामने ट्रांसफार्मर का यही हाल है। इसके तार जमीन में बिखरे हैं। ऐसे में करंट फैलने का डर भी बना रहता है। इसी प्रकार भग्गुढाना में मनीष ब्रेड फैक्ट्री के पास लगे ट्रांसफार्मर के डिस्ट्रीब्यूशन बॉक्स भी खुले पड़े हैं जिन्हें बंद नहीं किया गया है।

झालरों की तरह लटक रहे हैं तार

शहर के कई मोहल्लों में खुले तार झालरों की तरह लटक रहे है। इससे कभी भी हादसा होने से इंकार नहीं किया जा सकता है। शहरी उपभोक्ताओं को 24 घंटे बिजली आपूर्ति कराने के लिए बिजली विभाग द्वारा तमाम प्रयास किए जा रहे हैं। इनमें बिजली की चोरी रोकने के लिए प्लास्टिक कोटेट केबल लगाये है, लेकिन शहर के कई मोहल्लों में अब तक वर्षों पुराने बिजली के खंभो और तार को नहीं बदला गया है। बिजली तार झूलते नजर आ रहे है। ऐसी ही स्थिति अधिकांश गलियों में नजर आ रही हैं। जिससे कभी भी हादसा होने से इंकार नहीं किया जा सकता है।

इनका कहना है -

मैंने अभी-अभी ज्वानिंग ली है। इस बारे में पता करके जल्द ही फ्यूज स्विच, डिस्ट्रीब्यूशन बॉक्स और खुले तारों को व्यवस्थित करवाता हूं।

- योगेन्द्र चौधरी, एई, जोन -2, विद्युत विभाग बैतूल

अशोक वर्मा बने बैतूल अभिभाषक संघ के नए अध्यक्ष, अलका दहीर उपाध्यक्ष

देर रात तक चली मतगणना, जीत के बाद मना जश्न

बैतूल। जिला अभिभाषक संघ चुनाव में वरिष्ठ अधिवक्ता अशोक वर्मा ने अध्यक्ष पद पर विजय हासिल की। उन्होंने अपने प्रतिद्वंदी अजय सिंह चौहान को 45 वोटों के अंतर से हराया। शुक्रवार को सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक हुए मतदान में कुल 657 अधिवक्ताओं में से 600 ने वोट डाले। इनमें से 583 मत वैध पाए गए, जिनमें अशोक वर्मा को 314 और अजय सिंह चौहान को 269 मत प्राप्त हुए। मतगणना का कार्य देर रात डेढ़ बजे तक चला और फिर परिणाम घोषित किए गए। चुनाव में कुल 13 पदों के लिए 26 प्रत्याशी मैदान में थे। इनमें अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, सह सचिव, कोषाध्यक्ष, पुस्तकालय अध्यक्ष और सात कार्यकारिणी सदस्य शामिल थे। उपाध्यक्ष पद पर अलका दहीर ने 233 वोट हासिल कर जीत दर्ज की। उनके निकटतम प्रतिद्वंदी सुनील अग्रवाल को 177 वोट और राजेश बघेल को 169 वोट मिले। सचिव पद पर बलदेव कुमार महाजन को 271 वोट मिले, जबकि अजय सोनी को 212 और राजेश मंदरे को 117 वोट प्राप्त हुए। सह सचिव पद पर गौरव मगरदे ने 381 वोटों के साथ जीत दर्ज की। उनके मुकाबले दीपक कुमार आसरेकर को

165 और बंटी करोसिया को 34 वोट मिले। कोषाध्यक्ष पद पर सौरभ परिहार ने 336 वोट लेकर विजय हासिल की, जबकि मनोज कुमार डफरे को 237 वोट मिले। पुस्तकालय अध्यक्ष पद पर लोकेन्द्र शेषकर को 300 वोट और प्रतिद्वंदी शिवकुमार कापसे को 268 वोट प्राप्त हुए। मतगणना के बाद कोर्ट परिसर में जश्न का माहौल रहा। अशोक वर्मा के समर्थकों ने जीत का जोरदार स्वागत किया। इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पवार भी उपस्थित रहे। अशोक वर्मा 56 वर्ष के हैं और उनका अधिवक्ता के रूप में पंजीयन वर्ष 1996 में हुआ था। वे पिछले 28 वर्षों से वकालत कर रहे हैं। वे बैतूल बाजार नगर पंचायत में दो बार पार्षद रह चुके हैं। इसके अलावा भाजपा के विधि प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष और वर्मा समाज के जिलाध्यक्ष भी रह चुके हैं। वहीं, अजय सिंह चौहान का वकालत क्षेत्र में 43 वर्षों का अनुभव है और वे वर्ष 2011 में भी अभिभाषक संघ के अध्यक्ष रह चुके हैं।

ओम आयुर्वेदिक कॉलेज ने नशे के खिलाफ निकाली जागरूकता रैली

बैतूल। अंतरराष्ट्रीय नशा मुक्ति दिवस के अवसर पर ओम आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल बैतूल की ओर से नशा मुक्ति जन जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। रैली की शुरुआत कॉलेज के अध्यक्ष गणेश मालवी, कोषाध्यक्ष सोनू पाल तथा प्राचार्य डॉ. वीरेंद्र शाह के संबोधन और अनुमति के साथ हुई। कार्यक्रम में भारत-भारती और कढ़ाई क्षेत्र के नागरिकों को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया था, जिन्हें नशे से होने वाली सामाजिक और शारीरिक हानियों के बारे में विस्तार से बताया गया। रैली में ओम आयुर्वेदिक कॉलेज के लगभग 200 छात्र-छात्राएं, शिक्षकगण और कर्मचारी शामिल हुए। उपस्थित सभी लोगों को नशा मुक्ति की शपथ डॉ. संदीप पाल द्वारा दिलाई गई। उन्होंने युवाओं को नशे से दूर रहने और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करने का आह्वान किया। रैली में उत्साह का माहौल रहा और मार्ग में चलते हुए विद्यार्थियों ने नारे लगाकर नशा विरोधी संदेशों को जन-जन तक पहुंचाया। आयोजन का समापन डॉ. संदीप पाल के आभार प्रदर्शन के साथ किया गया। उन्होंने बताया कि इस रैली का उद्देश्य नागरिकों को नशे के दुष्परिणामों से अवगत कराना तथा युवाओं को नशा मुक्त जीवन अपनाने के लिए प्रेरित करना रहा।

पति की हत्या करने वाली पत्नी गिरफ्तार

लोहे की कलछी से सीने पर किया था वार

बैतूल। थाना शाहपुर अंतर्गत ग्राम जामुनढाना में लोहे की कलछी से पति के सीने पर वार कर हत्या करने वाली पत्नि को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। इस मामले में पुलिस ने धारा 103(1) भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) के तहत मामला पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया है। पुलिस जनसंपर्क अधिकारी से मिली जानकारी के अनुसार कमलेश पिता तेजू भलावी निवासी ग्राम गुवाड़ी,

हाल मुकाम जामुनढाना ने रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि उसके संबंधी मनवारी पिता बाबूलाल मर्सकोले (उम्र 46 वर्ष) का शव खून से लथपथ हालत में पलंग पर पड़ा हुआ है और उसकी हत्या उसकी पत्नी खुशमा मर्सकोले द्वारा की गई है। सूचना मिलते ही चौकी प्रभारी भौंरा उप निरीक्षक नीरज खरे अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंचे और घटनास्थल का सूक्ष्म निरीक्षण कर वैज्ञानिक साक्ष्य एकत्र किए गए। प्रारंभिक जांच में सामने आया कि मृतक मनवारी मर्सकोले शराब पीने का आदी था और प्राय-घर में विवाद करता था। घटना वाले दिन भी शराब पीकर आने के बाद उसका पत्नी से विवाद हुआ, जिसके दौरान पत्नी खुशमा मर्सकोले ने गुस्से में आकर रोटी पलटने की लोहे की नुकीली कलछी से उसके सीने पर वार कर दिया, जिससे उसकी मौके पर ही मृत्यु हो गई। घटना के बाद आरोपी महिला फरार हो गई थी, जिसे शाहपुर पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया गया। पूछताछ में आरोपिया ने जुर्म स्वीकार कर लिया है एवं घटना में प्रयुक्त कलछी की निशानदेही दी, जिसे बरामद कर जब्त किया गया है।

हत्या के प्रयास के दो आरोपियों को पुलिस ने किया गिरफ्तार

बैतूल। चाकू से पेट में वार कर दो युवकों को जान से मारने का प्रयास करने वाले दो आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस जनसंपर्क अधिकारी से मिली जानकारी के अनुसार फरियादी भानू ठाकुर पिता यादव ठाकुर निवासी ग्राम रातामाटी ने थाना कोतवाली बैतूल में रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि मोहित रैकवार उर्फ कार्लोस एवं राहुल रैकवार ने फरियादी एवं पीड़ित करण पवार पर जान से मारने की नीयत से चाकू से पेट में वार किया। पुलिस ने धारा 109(1), 3(5) भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) के तहत प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। इस मामले में थाना कोतवाली पुलिस टीम ने तत्परता दिखाते हुए प्रकरण के दोनों आरोपियों मोहित उर्फ कार्लोस पिता गंगू रैकवार, उम्र 23 वर्ष, निवासी कोठी बाजार बैतूल और राहुल रैकवार पिता दीपक रैकवार, उम्र 25 वर्ष, निवासी कोठी बाजार, बैतूल को गिरफ्तार कर घटना में प्रयुक्त चाकू जप्त किया गया और आरोपियों को न्यायालय के समक्ष पेश किया गया है। इस कार्रवाही में थाना प्रभारी कोतवाली निरीक्षक रविकांत डेहरिया, सहायक उप निरीक्षक राजेश मालवीय, प्रधान आरक्षक शिव कुमार एवं प्र.आर. तरुण पटेल, आरक्षक नितिन चौहान की सराहनीय भूमिका रही।

जयस पार्टी के प्रदेश सचिव राजेश कुमार सरठिया सहित जनप्रतिनिधियों ने ली भाजपा की सदस्यता

भोपाल। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा एवं प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी के समक्ष शनिवार को भाजपा प्रदेश कार्यालय में अनूपपुर जिले की पुष्पराजगढ़ विधानसभा के जयस पार्टी के प्रदेश सचिव श्री राजेश कुमार सरठिया, जनपद सदस्य श्री नेमा सिंह मार्को, पूर्व जनपद सदस्य श्री धनीराम सिंह मरावी, ग्रामसभा अध्यक्ष श्री जगदीश सिंह धुर्वे, सरपंच श्री महेन्द्र सिंह परस्ते, पूर्व पंच, सरपंच सहित 31 से अधिक जयस के पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि एवं कार्यकर्ताओं ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री शर्मा ने अंगवस्त्र पहनाकर उनका स्वागत किया। इस अवसर पर पार्टी के प्रदेश महामंत्री व विधायक श्री भगवानदास सबनानी, प्रदेश मीडिया प्रभारी श्री आशीष उषा अग्रवाल एवं अनुपपुर जिला अध्यक्ष श्री हीरा सिंह श्याम उपस्थित रहे।

मोदी जी के नेतृत्व में निरंतर हो रहा भाजपा परिवार का विस्तार: विष्णुदत्त शर्मा- भाजपा प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा ने सदस्यता ग्रहण कराते हुए कहा कि हमारी पार्टी के लिए गर्व की बात है कि भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विकास कार्यों से प्रभावित होकर बड़ी संख्या में अन्य दलों के लोग भाजपा परिवार से जुड़ रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में हमारे परिवार का निरंतर विस्तार हो रहा है। आज जयस पार्टी के प्रदेश सचिव श्री राजेश कुमार सरठिया के नेतृत्व में जयस के जनपद सदस्य श्री नेमा सिंह मार्को, पूर्व जनपद सदस्य श्री धनीराम सिंह मरावी, सरपंच श्री महेन्द्र सिंह परस्ते, पूर्व पंच, सरपंच सहित 31 से अधिक जयस के पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि एवं कार्यकर्ताओं ने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की है। सभी ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी, केन्द्रीय मंत्री श्री अमित शाह जी, भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी के नेतृत्व एवं विकास कार्यों पर विश्वास व्यक्त किया है। भाजपा परिवार में नए सदस्यों के जुड़ने से हमारी ताकत और बढ़ी है। हम सब मिलकर प्रदेश के विकास के लिए काम करेंगे। श्री शर्मा ने नवागत सदस्यों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि भारतीय जनता पार्टी एक परिवार है और आप सभी इस परिवार के सदस्य बन गए हैं। आज हम सब ये संकल्प लेते हैं कि आगामी विधानसभा चुनाव में पुष्पराजगढ़ विधानसभा में भी भाजपा की जीत का परचम फहराएंगे।

एम्स भोपाल के डॉ. केतन मेहरा ने स्पेन में आयोजित प्रतिष्ठित यूरोऑन्कोलॉजी कांग्रेस में भारत का प्रतिनिधित्व किया

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के नेतृत्व में संस्थान ने चिकित्सा और अनुसंधान के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। उनके मार्गदर्शन में, एम्स भोपाल के यूरोलॉजी विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. केतन मेहरा ने अपने पेशेवर जीवन में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की। उन्हें यूरोपियन एसोसिएशन ऑफ यूरोलॉजी (ईएयू) द्वारा इस वर्ष स्पेन के सेविल में आयोजित वार्षिक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन 'यूरोऑन्को 2025' में व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया।

यह प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय मंच यूरोलॉजिक ऑन्कोलॉजी के क्षेत्र में उभरती तकनीकों, नैदानिक चुनौतियों और नवाचारों पर चर्चा का एक अग्रणी वैश्विक मंच है। डॉ. मेहरा ने एम्स भोपाल में स्वयं द्वारा सफलतापूर्वक प्रबंधित किए गए लिंग और वृषण कैंसर के दुर्लभ व जटिल मामलों को प्रस्तुत किया। उनके द्वारा की गई केस-आधारित चर्चाएं, नैदानिक दृष्टिकोण और उपचार में नवाचार को विश्वभर से आए वरिष्ठ यूरोऑन्कोलॉजिस्ट्स, शोधकर्ताओं और शैक्षणिक प्रतिनिधियों द्वारा अत्यधिक सराहना प्राप्त हुई।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने पृथ्वीपुर में देवी अहिल्या नारी शक्ति सम्मेलन में हितलाभ वितरण के दौरान लाड़ली लक्ष्मी को गोद में उठाकर दुलारा।

रीवा, उत्तर प्रदेश का गेटवे, मध्य प्रदेश आपके आतिथ्य सत्कार के लिए तैयार : उपमुख्यमंत्री शुक्ल

● रीवा में 26 व 27 जुलाई को होगा रीजनल टूरिज्म कॉन्क्लेव ● वाराणसी में म.प्र. टूरिज्म बोर्ड के रोड शो का सफलतापूर्वक समापन

भोपाल। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन तथा मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में अधोसंरचना विकास, संस्कृति का संरक्षण एवं प्रोत्साहन और पर्यटन क्षेत्र में निजी सहभागिता को बढ़ावा देने के सुनियोजित एवं एकीकृत प्रयास किए जा रहे हैं। उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ल वाराणसी के होटल डबल ट्री बाय हिल्टन में पर्यटन रोड शो में पर्यटन व्यवसायियों, टूर ऑपरेटर्स, ट्रेवल एजेंट्स और होटल व्यवसाय से जुड़े हितधारकों को संबोधित कर रहे थे। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि रीवा, उत्तर प्रदेश का गेटवे है। उत्तर प्रदेश से कनेक्टिवटी सुगम है। मध्य प्रदेश सभी आगंतुकों, पर्यटकों के आतिथ्य सत्कार के लिए तैयार है। 26 एवं 27 जुलाई 2025 को रीवा, में मध्य प्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा रीजनल टूरिज्म कॉन्क्लेव का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव शामिल होंगे। आप सभी इसमें आमंत्रित हैं।

पर्यटकों को मिलेगा समृद्ध और विविध अनुभव - प्रमुख सचिव पर्यटन एवं संस्कृति तथा प्रबंध संचालक, मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड श्री शिव शेखर शुक्ला ने कहा कि मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश हमारी संस्कृति, विरासतों और धरोहरों को संजोकर पर्यटकों को सुखद और अविस्मरणीय अनुभव प्रदान करें। उत्तर प्रदेश और म.प्र. के पर्यटन में काफी समानता है। बाबा महाकाल और बाबा काशी विश्वनाथ दुनियाभर के श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। पर्यटकों को एक समृद्ध और विविध अनुभव मिलेगा साथ ही धार्मिक, सांस्कृतिक, स्वास्थ्य और विरासत पर्यटन को आकर्षित करने में सहयोग प्राप्त होगा।

मध्यप्रदेश और उत्तर प्रदेश के पर्यटन व्यवसायियों, टूर ऑपरेटर्स, ट्रेवल एजेंट्स और होटल व्यवसाय से जुड़े हितधारकों के बीच सहयोग और साझेदारी को बढ़ावे के उद्देश्य से मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड द्वारा पर्यटन रोड शो का आयोजन किया गया। यह रोड शो आगामी माह में होने वाले मध्यप्रदेश ट्रैवल मार्ट और रीजनल टूरिज्म कॉन्क्लेव की तैयारियों के दृष्टिगत किया गया। इस अवसर पर प्रतिष्ठित संत श्री सतुआ महाराज, वाराणसी (उत्तर प्रदेश) कैंट एरिया के विधायक श्री सौरभ श्रीवास्तव विशेष रूप से उपस्थित रहे।

कर्तव्यनिष्ठा, संवेदनशीलता एवं पूर्ण उत्तरदायित्व के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करें : उप मुख्यमंत्री शुक्ल

भोपाल। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने कहा है कि सरकार का लक्ष्य है कि हर नागरिक को गुणवत्तापूर्ण एवं सुलभ स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध हों। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश की स्वास्थ्य सेवाओं को निरंतर सुदृढ़ किया जा रहा है। प्रदेश में नियमित चिकित्सक भर्ती प्रक्रिया, चिकित्सा महाविद्यालयों की क्षमता वृद्धि तथा स्वास्थ्य संस्थानों के अधोसंरचना विकास के कार्य भी निरंतर प्रगति पर हैं। इसी क्रम में 876 बंधपत्रधारी विशेषज्ञ डॉक्टरों की पदस्थापना की गई है, जिससे चिकित्सकीय संसाधनों को मजबूती मिलेगी।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने पदस्थ सभी चिकित्सकों से अपेक्षा व्यक्त की है कि वे कर्तव्यनिष्ठा, संवेदनशीलता एवं पूर्ण उत्तरदायित्व के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करें, जिससे जनसाधारण को श्रेष्ठ और सुलभ स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त हो सकें। लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग द्वारा मध्यप्रदेश के शासकीय एवं निजी चिकित्सा महाविद्यालयों से स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम पूर्ण कर चुके 876 बंधपत्रधारी चिकित्सकों की पदस्थापना की गई है। यह पदस्थापनाएँ चिकित्सकों द्वारा स्नातकोत्तर प्रवेश के समय प्रस्तुत अनिवार्य सेवा बंधपत्र के अनुक्रम में की गई हैं।

'यशराज' की 'वॉर-2' 14 अगस्त को रिलीज

'वॉर-2' की रिलीज के 50 दिन पहले फिल्म का एक नया पोस्टर जारी किया गया। वाईआरएफ (यशराज फिल्म्स) की ब्लॉकबस्टर स्पाई यूनिवर्स की प्रतीक्षित एक्शन फिल्म 'वॉर-2' भारत में घरेलू रिलीज के साथ प्रमुख अंतरराष्ट्रीय बाजारों उत्तरी अमेरिका, मध्य पूर्व, यूके और यूरोप, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका और दक्षिण पूर्व एशिया में विशेष रूप से आईमैक्स में दिखाई जाएगी।

देश के प्रमुख फिल्म स्टूडियो और देश की सबसे बड़ी सिनेमा फ्रेंचाइजी का घर 'यशराज फिल्म्स' (वाईआरएफ) ने अपनी अगली प्रमुख फिल्म 'वॉर-2' की वैश्विक आईमैक्स रिलीज की घोषणा की। हाई-ऑक्टेन जासूसी थ्रिलर 14 अगस्त को देश में अपनी घरेलू रिलीज के साथ प्रमुख अंतरराष्ट्रीय बाजारों उत्तरी अमेरिका, मध्य पूर्व, यूके और यूरोप, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका और दक्षिण पूर्व एशिया में आईमैक्स थिएटरों में दिखाई देगी। यह दुनियाभर के प्रशंसकों के लिए नेक्स्ट लेवल अनुभव प्रदान होगा।

'वॉर-2' वाईआरएफ स्पाई यूनिवर्स में नवीनतम धमाकेदार अध्याय है। भारत की सबसे बड़ी और सबसे सफल फिल्म फ्रैंचाइज़ी पठान, टाइगर-3 और 'वॉर' के बाद यह प्रस्तुत है। 2023 की ब्लॉकबस्टर 'पठान' पहले से ही भारतीय बॉक्स ऑफिस के इतिहास में सबसे ज्यादा कमाई करने वाली आईमैक्स रिलीज़ में से एक है, जो फ्रैंचाइज़ी की दुनियाभर में अपनी लोकप्रियता को रेखांकित करती है। 'वॉर-2' के 50 दिन पूरे होने पर वाईआरएफ ने आईमैक्स घोषणा के साथ ऋतिक रोशन, एनटीआर और कियारा आडवाणी के नए पोस्टर जारी किए।

यशराज फिल्म्स के उपाध्यक्ष (अंतरराष्ट्रीय वितरण) नेल्सन डिसूजा ने कहा कि यशराज फिल्म्स के जरिए हम भारतीय सिनेमा की सीमाओं को वैश्विक मंच पर आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने आगे कहा कि 'वॉर-2' वाईआरएफ स्पाई यूनिवर्स में एक ऐतिहासिक क्षण है। हम इसे दर्शकों के लिए सबसे अधिक प्रभावी फॉर्मेट में पेश करने के लिए आईमैक्स के साथ साझेदारी करके रोमांचित हैं। 'वॉर-2' में भारतीय सिनेमा के इतिहास के दो सबसे बड़े सुपर स्टार, ऋतिक रोशन और एनटीआर सबसे शानदार आमने-सामने हैं। इन्हें वास्तव में हर मायने में एक फुल मनोरंजन कहा जा सकता है। आईमैक्स अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दर्शकों को इस भरपूर रोमांच पेश करेगा।

आईमैक्स में अंतर्राष्ट्रीय विकास और वितरण के उपाध्यक्ष क्रिस्टोफर टिलमैन ने कहा कि हम आदित्य चोपड़ा और यशराज फिल्म्स के साथ मिलकर साल की सबसे बड़ी भारतीय फिल्म 'वॉर-2' को दुनियाभर के आईमैक्स स्थानों पर लाने के लिए रोमांचित हैं। इससे इस शानदार फ्रेंचाइजी और एक्शन फिल्म निर्माण में मास्टर क्लास की वैश्विक अपील मजबूत होगी। निर्देशक अयान मुखर्जी एक रोमांचकारी मनोरंजन तैयार कर रहे हैं और ऋतिक रोशन और जूनियर एनटीआर 'वॉर-2' में शानदार प्रदर्शन करेंगे। इससे अविस्मरणीय एक्शन सिनेमा का निर्माण होगा जो केवल आईमैक्स द्वारा प्रदान किए जाने वाले अतुलनीय अनुभव के लिए तैयार किया गया है।

फिल्म निर्माता अयान मुखर्जी द्वारा निर्देशित 'वॉर-2' में ज़बरदस्त एक्शन सीक्वेंस और अत्याधुनिक दृश्य हैं। वॉर 2 को आईमैक्स प्रेजेंटेशन को ध्यान में रखते हुए फिल्माया गया था, जिसमें अधिकतम प्रभाव के लिए प्रारूप की अल्ट्रा-बड़ी स्क्रीन और सिग्नेचर साउंड का उपयोग किया गया। 'वॉर-2' की आईमैक्स रिलीज़ के लिए एक विशेष टीज़र पहले ही दुनियाभर के सिनेमाघरों में चलना शुरू हो चुका है, जिससे प्रशंसकों को इस बात की झलक मिलती है कि वे क्या उम्मीद कर सकते हैं। फिल्म का पूरा अनुभव 14 अगस्त को सामने आएगा।

आयुष्मान को 'ऑस्कर' में शामिल होने का निमंत्रण!

हिंदी कलाकार आयुष्मान खुराना, जिन्होंने भारत में अपने अभिनय और नए ज़माने के सिनेमा के माध्यम से अपने लिए एक अलग पहचान बनाई, उन्हें इस साल 'द एकेडमी ऑफ मोशन पिक्चर आर्ट्स एंड साइंसेज' (ऑस्कर) में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया है! अकादमी के सीईओ बिल क्रेमर और अकादमी की अध्यक्ष जेनेट यांग ने कहा कि हम कलाकारों, प्रौद्योगिकीविदों और पेशेवरों के इस प्रतिष्ठित वर्ग को अकादमी में शामिल होने के लिए आमंत्रित करते हुए रोमांचित हैं।

फिल्म निर्माण और बड़े फिल्म उद्योग के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के माध्यम से, इन असाधारण प्रतिभाशाली व्यक्तियों ने हमारे वैश्विक फिल्म निर्माण समुदाय में अमिट योगदान दिया है। मोशन पिक्चर आर्ट्स एंड साइंसेज अकादमी ने मोशन पिक्चर्स और सिनेमा में उनके योगदान के लिए दुनिया भर के प्रतिष्ठित कलाकारों को आमंत्रित किया है। आयुष्मान गिलियन एंडरसन, एरियाना ग्रांडे, कमल हासन, मिकी मैडिसन, जेरेमी स्ट्रॉन्ग, कीरन कल्किन जैसे पावर हाउस अभिनेताओं और कलाकारों की सूची में शामिल हो गए हैं।

आयुष्मान को हमेशा से ही उनकी बेहतरीन अदाकारी के लिए दुनियाभर में सराहा जाता रहा है। सिनेमा ऐसा माध्यम जिसका इस्तेमाल उन्होंने लगातार राष्ट्र निर्माण में योगदान देने के लिए किया है। उन्हें 'टाइम' मैगज़ीन द्वारा दो बार सम्मानित किया जा चुका है। प्रतिष्ठित टाइम 100 इम्पैक्ट अवार्ड 2023 और प्रतिष्ठित टाइम 100 सूची के लिए जिसमें उन्हें दुनिया के 100 सबसे प्रभावशाली लोगों में चुना गया था! आयुष्मान यूनिसेफ इंडिया के राजदूत भी हैं, जो बाल अधिकारों के संरक्षण के लिए अथक प्रयास करते हैं।

रियल बॉक्स

फ़िल्मी परिवारों में 'रोशन' की अहमियत

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

फिल्म इंडस्ट्री में वैसे तो सिर्फ कलाकारों का अभिनय ही चलता है। लेकिन, इंडस्ट्री में फ़िल्मी खानदानों की भी अलग ही चमक-धमक है। इनकी जड़ें फ़िल्मी दुनिया में गहराई तक है। राज कपूर परिवार की कई पीढ़ियां फिल्म की कई विधाओं से जुड़ी रही, आज भी रणवीर उस परिवार के प्रतिनिधि हैं। कपूर परिवार का इतिहास तो पृथ्वीराज कपूर के समय से शुरू होता है। ऐसा ही 'सागर परिवार' है, जिसका पौधा रामानंद सागर ने रोपा था और आज भी ये पल्लवित है। इनके अलावा सलमान खान का परिवार भी है, जिसे उनके पिता सलीम खान की स्क्रिप्ट राइटिंग ने आकार दिया। इसके अलावा धर्मेंद्र और अमिताभ बच्चन के परिवारों का भी जलवा है। लेकिन, इनके बीच जिस परिवार का कभी जिक्र नहीं होता, वो है 'रोशन परिवार।' संगीतकार रोशन लाल नागरथ के दो बेटों एक्टर-निर्देशक राकेश रोशन और संगीतकार राजेश रोशन के अलावा एक्शन के सरताज ऋतिक रोशन को कौन नहीं जानता।

संगीतकार रोशन ने अपने समय काल में कई कालजयी गीतों की रचना की। उनके कई गीत आज भी गुनगुनाए जाते हैं। उनकी संगीत विधा को उनके एक बेटे राजेश रोशन ने आगे बढ़ाया और आज भी उसे जिंदा रखे हैं। 'रोशन परिवार' का एक बेटा राकेश रोशन एक्टिंग तरफ मुड़ गया। लेकिन, वे बहुत ज्यादा सफल नहीं हुए। इसके बाद वे निर्देशन में आए और अपना अलग मुकाम बनाया। अपने बेटे ऋतिक रोशन की फिल्मों की सफलता में राकेश रोशन का बहुत बड़ा हाथ है। इस 'रोशन परिवार' को आज संगीत के अलावा निर्देशन और एक्शन हीरो के लिए पहचान मिली है। इस परिवार की दूसरी और तीसरी पीढ़ी ने अपने अच्छे काम और समय की धारा के साथ भी अपनी राह बनाई। 'रोशन परिवार' की कहानी बस इतनी सी है। इस परिवार की तीन पीढ़ियों ने मनोरंजन की दुनिया को रोशन किया, लेकिन उन्हें अंधकार से भी रूबरू होना पड़ा। इस परिवार की सबसे बड़ी ताकत इनके पारस्परिक संबंध है। आज भी परिवार अलग रहते हुए भी एकजुट है। कहते हैं कि ऋतिक रोशन हीरो बनने तक अपने चाचा राजेश रोशन के साथ सोते थे। आज भी उनकी अपने पिता से ज्यादा अपने चाचा से पटती है। एक दूसरे का साथ निभाना और एक दूसरे के लिए खड़े रहने की यह प्रवृत्ति ही रोशन को अलग रखती है।

दस्तूर है कि रोशनी को कभी छिपाकर नहीं रखा जा सकता है, यही वजह है कि आज 'रोशन परिवार' का नाम सिनेमा की दुनिया में शिद्दत के साथ चमचमा रहा है। सिने जगत में पिछले 6 दशक से छाया ये परिवार अपनी बहुमुखी प्रतिभा से बहुत कुछ कहता है। माना जाता रहा है, कि इस परिवार का सरनेम 'रोशन' होगा जिसके उत्तराधिकारी राकेश रोशन, राजेश रोशन और ऋतिक रोशन हैं। लेकिन, सच्चाई यह है कि इस परिवार का सरनेम नागरथ है, जो उनके पिता रोशनलाल नागरथ की वजह से 'रोशन' पर आकर रुक गया। रोशन परिवार कश्मीरी ब्राह्मण परिवार की पौध है, जो अपने गीत-संगीत में कश्मीरी बयार की तरह ताजगी ही नहीं बल्कि केसर सी महक भी लाते हैं। यही महक इस पीढ़ी के पुरोधा रोशन की संगीत रचना 'रहें ना रहें हम महका करेंगे बन के कली बन के सबा बागे वफ़ा में' की याद ताजा कर देती है।

रोशन परिवार के बारे में आज के दर्शक इतना ही जानते हैं कि 25 साल पहले अभिनेता ऋतिक रोशन ने फिल्म 'कहो ना प्यार से' अभिनय में कदम रखा था। फिल्म की सफलता ने उन्हें रातों रात स्टार बना दिया। फिल्म के निर्देशक ऋतिक के पापा राकेश रोशन थे। राकेश ने भी फिल्म इंडस्ट्री में अपनी पारी अभिनय से आरंभ की। लेकिन, उनकी प्रतिभा को वह सम्मान नहीं मिला। उन्होंने निर्देशन में हाथ आजमाया और शोहरत हासिल की। उनके भाई राजेश रोशन ने संगीत की राह पकड़ी। दोनों भाइयों के इंडस्ट्री में आने का आधार बने उनके पिता संगीतकार रोशन। वही रोशन जिन्होंने हिंदी सिनेमा को बड़े अरमानों से रखा है, सारी सारी रात तेरी याद सताए, रहते थे कभी जिनके दिल में, रहें न रहें हम न महका करेंगे, मन रे तू काहे, जो वादा किया वो निभाना पड़ेगा, तुम अगर मुझको न चाहो तो कोई बात नहीं और 'जिंदगी भर नहीं भूलेगी वो बरसात की रात' जैसे कई यादगार गानों को संगीतबद्ध किया।

यह बात कम लोग जानते हैं, कि रोशन परिवार के सभी सदस्यों को संगीत में महारथ है। राजेश रोशन तो घोषित रूप से संगीतकार हैं, लेकिन गीत संगीत पर राकेश रोशन और ऋतिक रोशन का हाथ भी कहीं से तंग नहीं है। यह गुण उन्हें न केवल संगीतकार रोशन से विरासत में मिला, बल्कि उनकी मां इरा रोशन भी संगीत की जानकार थी। उन्होंने रोशन के अधूरे काम को पूरा किया और 'अनोखी रात' के मशहूर गीत 'महलों का राजा मिला रानी बेटी राज करेगी' जैसा कर्णप्रिय गीत भी कम्पोज किया। बाद में रोशन बंधुओं ने अपनी मां के भजनों का एक एलबम भी जारी किया था। पिछले करीब 6 दशक में रोशन परिवार 'रहे न रहे हम महका करें' गाने की तरह संगीत की दुनिया में महक रहे हैं। उनके नाम को बाद में परिवार ने सरनेम की तरह अपना लिया। यह नई बात है, क्योंकि अभी तक यही प्रचारित किया जाता रहा कि 'बच्चन परिवार' पहला परिवार है, जिसने अपने सरनेम श्रीवास्तव को जातिसूचक मानकर 'बच्चन' तख्खलुस को अपना सरनेम बना लिया।

कहते हैं कि वंश परिवार की बेल ज्यादा ऊपर तक नहीं फैलती। कुछ बनने के लिए बहुत कुछ खोना और खपना भी पड़ता है। रोशन परिवार ने खुद को खपाकर अपने आप को बनाया। रोशन के जीवित रहने तक तो उनके बेटों को कोई जानता नहीं था। लेकिन, उनकी असमय मौत ने बड़े बेटे को लड़कपन से सीधे जिम्मेदार इंसान बना दिया था। छोटे बेटे को उन संगीतकारों का सहायक बनकर अपना करियर शुरू करना पड़ा, जो कभी रोशन के आगे सिर झुकाया करते थे। इस पर कोई यदि सोचे कि ऋतिक रोशन को तो सब कुछ प्लेट में रखकर मिला होगा, तो यह भी गलत है। उन्होंने सबसे ज्यादा संघर्ष कर अपनी शारीरिक कमजोरियों पर नियंत्रण पाने के बाद ही फिल्मी अखाड़े में कूदने का काम किया।

फिल्म इंडस्ट्री में संगीतकार रोशन के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। उनके संगीत में उनके स्वभाव की मधुरता भी झलकती है। उनका करियर बहुत बड़ा नहीं हो पाया। 70 के दशक की शुरुआत में ही उन्होंने दुनिया को अलविदा कह दिया। लेकिन, इसके बाद भी जितना काम उन्होंने किया उसमें ही संगीत श्रोताओं के लिए बेशुमार नगमों की सौगात दी। रफी की आवाज में चित्रलेखा का गीत 'मन रे तू काहे न धीर धरे' जिसे उससे रोशन के पूरे संगीत का आकलन किया जा सकता है। इसी तरह मुकेश के साथ 'ओहो रे ताल मिले नदी के जल में' गाने की सादगी और स्वाभाविकता तथा लता के साथ 'रहें न रहें हम' की शाश्वत सत्यता उनके संगीत के वह बैरोमीटर है, जो उनके कार्य का आकलन करते हैं। कव्वालियों के तो वे शहंशाह थे। 'बरसात की रात' में उनका कमाल अविस्मरणीय है। 'दिल जो न कह सका' और 'ताज महल' के 'जो वादा किया वो निभाना पड़ेगा' के साथ तो उनका संगीत चरम पर पहुंचा था। लेकिन, उनके सिद्धांतों ने उनके पैरों में जंजीर बांध रखी, जो आज की दुनिया में सबसे बड़ी बाधा बनी।

अपने पिता की विरासत को फिल्म इंडस्ट्री में अगर किसी ने सही मायने में आगे बढ़ाया और संजोया तो उसमें सबसे पहले राजेश रोशन का ही नाम आता है। पिता की तरह ही राजेश रोशन ने भी संगीत की सेवा की और फिल्म इंडस्ट्री को नई दिशा दी। 'जूली' फिल्म के गानों को भला कौन भूल सकता है। यहां तक कि ऋतिक के लिए 'कहो ना प्यार है' के गानों का संगीत भी राजेश रोशन ने दिया। उस फिल्म के गानों को आए हुए 25 साल हो गए, लेकिन वो गाने आज भी ताजा लगते हैं। महमूद के सहयोग से आगे बढे राजेश रोशन ने बाद में सभी बड़े निर्माताओं के साथ काम किया। लेकिन, अपनी शर्तों पर काम करने और किसी के पास काम मांगने नहीं जाने के उनके सिद्धांत ने उन्हें सही अर्थों में अपने पिता का उत्तराधिकारी बनाया।

राकेश रोशन का करियर और उसकी सफलता की अलग ही कहानी है। एक्टर के तौर पर उनकी विफलता और एक डायरेक्टर के तौर पर उनकी सफलता को कौन नहीं जानता। काफी संघर्ष के बाद एक महान परिवार से आने वाले सदस्य को इंडस्ट्री में पांव जमाने का मौका मिला। लेकिन, जब मिला तो उन्होंने उसी नएपन के साथ अपने काम को अंजाम दिया, जिसके लिए रोशन परिवार जाना जाता रहा है। परिवार के तीसरे सदस्य ऋतिक रोशन 51 साल की उम्र में अभी भी लीड एक्टर के तौर पर सक्रिय हैं। उन्होंने अपने डांस, पर्सनालिटी और डेथ्थ से मॉडर्न युग के हीरो की नई परिभाषा गढ़ी और यूथ की पहली पसंद बने। शुरुआत में ऋतिक का हकलाना, हाथों में एक अंगूठा ज्यादा होना उनकी कमजोरी था। जिस पर उन्होंने जीत हासिल कर युवा दिलों की धड़कन बनने का जो काम किया वह बेमिसाल है।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

नए अवतार में फिर परदे पर आ रही है 'शोले'

अशोक जोशी

हिंदी सिनेमा के लिए यह वर्ष खास महत्व का है। इस वर्ष ही संगीतकार मनमोहन, फिल्मकार गुरुदत्त और राज कपूर की जन्म शताब्दी मनाई जा रही है। इसी साल ही हिन्दी सिनेमा की कल्ट मूवी शोले के प्रदर्शन को 50 साल पूरे हो रहे हैं। जब 'शोले' रिलीज

हुई, उसी साल देश में आपातकाल लगा था, जिसके चलते 'शोले' के निर्माता को फिल्म का अंत बदलना पड़ा था। क्योंकि सरकार नहीं चाहती थी कि कानून को लाचार बताया जाए और पीडित खुद अपना बदला लेने की जुर्रत कर सके। लेकिन, अब 'शोले' को उसके ओरिजनल क्लाइमेक्स के साथ फिर रिलीज किया जा रहा है।

शोले' ऐसी फिल्म है, जिसे तब से लेकर आजतक हर वर्ग के दर्शक ने सराहा है। फिल्म को फिल्म हेरिटेज फाउंडेशन के सहयोग से नया अवतार मिला है। इसे इटली के विशाल प्लाजा पियाजा मैगिओर सिनेमाघर में प्रदर्शित किया गया। जिस तरह इसे प्रतिसाद मिला, उससे यह उम्मीद जागी है कि अनकट दृश्यों और मूल अंत के साथ 'शोले' भारतीय दर्शकों को भी देखने को मिलेगी। पचास साल पहले जब 'शोले' प्रदर्शित हुई थी, तब फिल्म के मूल अंत में पूर्व पुलिस अधिकारी ठाकुर बलदेव सिंह गब्बर सिंह को अपने स्पाइक वाले जूतों से मारकर अपना बदला लेते हुए दिखाया गया था। तब सेंसर बोर्ड इस अंत से खुश नहीं था। वह चाहता था कि फिल्म का अंत बदला जाए। बोर्ड के सदस्यों की राय थी कि फिल्म में बहुत अधिक हिंसा है। इसलिए निर्देशक रमेश सिप्पी ने अंत को फिर से शूट किया, जिसमें ठाकुर द्वारा पीटे जाने के बाद गब्बर को पुलिस गिरफ्तार कर लेती है।

इसे पुराने अंत के साथ फिर से प्रदर्शित करना आसान नहीं था। क्योंकि, इन पचास सालों में 'शोले' की निगेटिव पूरी तरह से खराब हो चुकी थी। इसकी रीलें आपस में चिपक गई थी। जिसे नया रूप देने के लिए फिल्म हेरिटेज फाउंडेशन आगे आई और रमेश सिप्पी ने इसके लिए वित्तीय सहायता की। तीन साल की अथक मेहनत के बाद इसे फॉर-के तकनीक और डॉल्बी साउंड सिस्टम के साथ नए अवतार में तैयार किया गया। जब शुक्रवार को विश्व प्रीमियर वार्षिक इल सिनेमा रिट्रोवाटो फेस्टिवल के दौरान इटली के बोलोग्ना में एक विशाल प्लाजा पियाजा मैगिओर में एक बड़े ओपन एयर थियेटर वाली स्क्रीन पर 'शोले' को उसके मूल अंत के साथ दिखाया गया तो इसे भरपूर तारीफ मिली।

फिल्म के बारे में धर्मेंद्र ने राज खोलते हुए कहा कि बहुत कम लोगों को पता होगा कि उन्हें पहले गब्बर सिंह और फिर ठाकुर बलदेव सिंह की भूमिका की पेशकश की गई थी। लेकिन, उनका एक ही लक्ष्य था कि वे केवल वीरू की भूमिका ही निभाना चाहता थे। क्योंकि वह उनके व्यक्तित्व को चित्रित करता था। फिल्म में उन्हे टंकी वाले और मंदिर वाले दृश्य सबसे अच्छे लगे। उनकी दृष्टि में सबसे शक्तिशाली

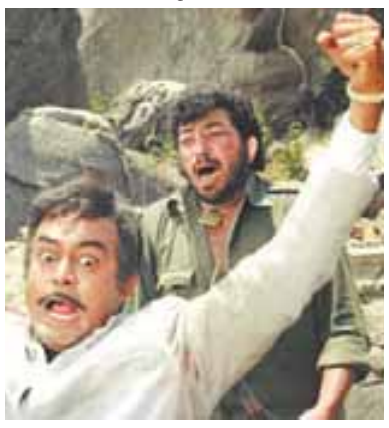

दृश्य जय की मृत्यु वाला था, जो आज भी उनके मस्तिष्क पटल पर अंकित है। जब फिल्म के नए अवतार की खबर अमिताभ बच्चन तक पहुंची, तो उन्होंने कहा कि जिंदगी में कुछ चीजें हमेशा के लिए आपके मस्तिष्क में अंकित हो जाती हैं। 'शोले' ऐसी ही फिल्म है। उनके लिए फिल्म की शूटिंग एक अविस्मरणीय अनुभव था। लेकिन, उस समय उन्हें यह नहीं पता था कि 'शोले' भारतीय सिनेमा के लिए मील का पत्थर साबित होगी। वह आज भी यही उम्मीद करते है कि 50 साल बाद भी यह नई पीढी के दर्शकों की कल्पना पर खरी उतरेगी।

सलीम-जावेद की जोड़ी की लिखी यह फिल्म 204 मिनट लंबी है। इसमें सितारों की लम्बी चौड़ी फौज है, जिनमें संजीव कुमार,

हेमा मालिनी, जया भादुड़ी अमजद खान, हेलेन, सचिन, एके हंगल, विजू खोटे, मैक मोहन, सहित कई कलाकार शामिल है। फिल्म के लिए हैदराबाद के नजदीक पूरा एक गांव रामगढ़ बसाया गया था जो आज भी अस्तित्व में है। फिल्म का संगीत आरडी बर्मन ने तैयार किया था और इसे 70 एमएम और स्टीरियोफोनिक साउंड में फिल्माया गया था।

जहां तक शोले के रेस्टोरेशन का सवाल है, तीन साल पहले 'शोले' का निर्माण करने वाली सिप्पी फिल्म्स के शहजाद सिप्पी ने इसके रेस्टोरेशन के लिए फिल्म हेरिटेज फाउंडेशन से संपर्क किया था। वह मुंबई के एक गोदाम में रखे गए फिल्म के कुछ अंशों के बचाने यह काम करवाना चाहते थे। सबसे बड़ी परेशानी यह थी कि फिल्म के डिब्बों से लेबल गायब थे। लेकिन, सामग्री की जांच करने पर, फिल्म हेरिटेज फाउंडेशन को पता चला कि उनमें मूल

35 मिमी कैमरा और साउंड निगेटिव थे।

शहजाद ने फिल्म हेरिटेज फाउंडेशन को ब्रिटेन के एक स्टोरेज में संरक्षित फिल्म के कुछ एडिशनल कंटेटस के बारे में भी जानकारी दी। ब्रिटिश फिल्म संस्थान की मदद से एफएचएफ को इन सामग्रियों तक पहुँच मिली। इसके बाद लंदन और मुंबई दोनों जगहों से रीलों को रिस्टोर करने के लिए बोलोग्ना में एक विशेष फिल्म रेस्टोरेशन लैब एल इमेजिन रिट्रोवाटा में ले जाया गया। जहां तीन साल के अथक परिश्रम के बाद इसके रेस्टोरेशन का काम पूरा हुआ। इसमें भी बहुत परेशानियां सामने आई। क्योंकि, ओरिजिनल कैमरा निगेटिव की हालत इतनी खराब थी, कि इसका रेस्टोरेशन एक बेहद मुश्किल काम था। सबसे बड़ी चुनौती 35 एमएम वाली प्रिंट को 70 एमएम वाइडस्क्रीन में बदलने की थी। लेकिन, इस काम को भी अत्यधिक परिश्रम के साथ सफलता से पूरा किया गया।

इस कवायद में फिल्म हेरिटेज फाउंडेशन के निदेशक शिवेंद्र सिंह डूंगरपुर ने बहुत रुचि दिखाते हुए समर्पण भावना से काम किया। उनका कहना है कि इस तथ्य के बावजूद कि वह मूल कैमरा निगेटिव का उपयोग नहीं कर सके और एक भी 70 मिमी प्रिंट भी नहीं बचा था। फिर भी उन्होंने यह सुनिश्चित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी कि इस ऐतिहासिक फिल्म को न केवल खूबसूरती से रिस्टोर किया जाए। इसके लिए उन्होंने इसका ओरिजिनल क्लाइमेक्स और कुछ काटे हुए दृश्यों को यथा स्थान रखकर इसकी रोचकता को पहले से ज्यादा बढा दिया, ताकि नए दर्शकों के साथ साथ उस जमाने के दृश्क भी इसका लुत्फ ले। सिप्पी फिल्म्स इसे सिप्पी फिल्म के संस्थापक जीपी सिप्पी की दूरदृष्टि और विरासत को विनम्र श्रद्धांजलि मानते हैं। खबर भी है कि इतालवी प्रीमियर के बाद 'शोले' को इसकी 50वीं वर्षगांठ मनाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय समारोहों और थिएटरों के साथ 15 अगस्त को भारत में भी प्रदर्शित किया जाएगा। यह प्रदर्शन भारतीय दर्शकों के सामने नए अवतार में आएगी।

बीस और बीस का जोड़... दस होता है !

धर्म कर्म

प्रकाश पुरोहित

भ 'अब हम क्या करेंगे?' पत्नी का यह स्थायी सवाल है।

'जो तुम कहो।' मेरा भी स्थायी जवाब है।

' पहले यह पूछो तो कि मसला क्या है!' वह झल्ला उठी।

'तुम बगैर बताए तो मानोगी नहीं, सो अब बता भी दो।'

'ये जो ए सी में 20 और 28 का नया नियम आ रहा है, उसका क्या?' उसने पूछा या बताया।

'इसमें अपन क्या कर सकते हैं...! ए सी कंपनियों को सोचना होगा कि तैयार ए सी का क्या होगा और आगे चल कर यह मार्जिन कहीं और कम तो नहीं हो जाएगा कि सिर्फ पच्चीस पर ही चलेंगे, ना नीचे और ना ऊपर!'

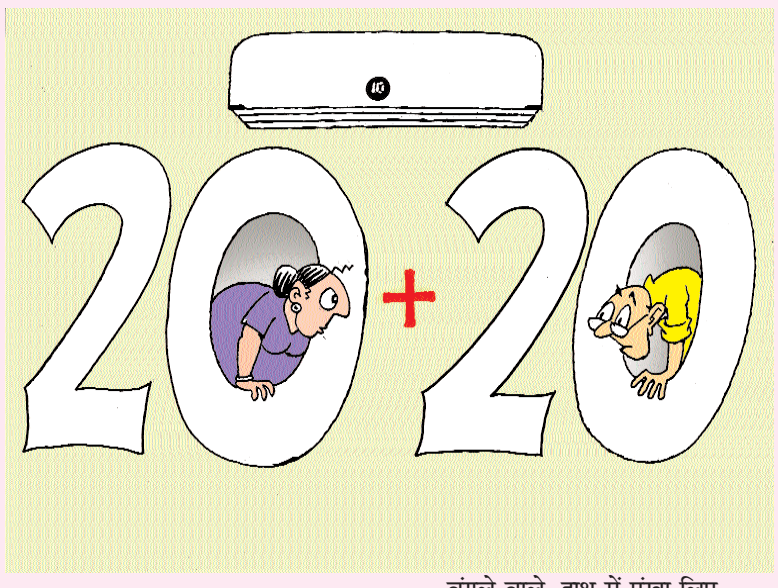

मुझे तो यही समझ आ रहा था, तो बता दिया।

'अपना ए सी 18 से ऊपर गया है कभी गरमी में? कहां तो उम्मीद थी कि धरती की गरमी बढ़ती देख शायद और नीचे यानी 15 डिग्री तक आ जाएगा और कहां अब बीस के भी लाले पड़ने वाले हैं। अब अपन क्या करेंगे...?' मुझे क्यों समेट लिया अपने साथ, समझ नहीं पाया, क्योंकि मैं तो रजाई ओढ़ कर सोता हूं, जब ए सी चलता है। मैं इस नए नियम से खुश हूं, मगर जाहिर भी नहीं कर सकता हूं कि घर का तापमान बढ़ सकता है।

'हमें क्या, हमने तो अभी दो साल पहले ही ए सी लगवाया है। दस साल तो चलना ही चाहिए और ऐसा कोई नियम तो आया नहीं है कि सभी ए सी सरकार के हिसाब से चलेंगे या ऐसे ए सी कहीं पाए गए तो सरकार जब्त कर लेगी।' समझाना चाहा, अपनी खुशी दबाते हुए।

'अभी तो हमने अपने बेडरूम में लगवाया है, जिसमें हम आधी रात को सोने आते हैं, लेकिन ड्राइंग रूम, डाइनिंग रूम और बाथरूम भी तो हैं, वहां भी तो आगे-पीछे लगवाने ही पड़ेंगे, कितनी तो गरमी होती है।' ये सभी भविष्य के इंतजाम, मेरी जानकारी में अब तक नहीं थे। 'बाकी जगह तो चलता है, बेड-रूम जरूरी है तो वहां लगा ही है ना!' साफ इनकार तो कर नहीं सकता था।

'मंदसौर वाली भाभी ने तो पूरे घर में ए सी लगवा लिए हैं और हम अभी तक बेडरूम पर ही अटके हैं। जब तक नए ए सी बाजार में नहीं आ जाते, क्या तब तक हम सभी जगह ए सी नहीं लगवा लें?' उसने उत्साह से पूछा तो मुझे कुछ देर जवाब नहीं सूझा।

'देखो सरकारी काम है, एकदम तो होंगे नहीं, ले लेंगे धीरे-धीरे... एक-एक करके, जैसे शादी के बाद बेडरूम में लगवाया है या नहीं!' यही सूझा मुझे।

'हां, पूरे तीस साल बाद...! आप हर काम टाल देते हो और बाद में पछताते हो, समय रहते करने में ही समझदारी है। मैं तो कहती हूं, जितने भी मिल जाएं, अभी लगवा लेते हैं, गरमी तो कम होने से रही और अभी तो सर्दी आने वाली है तो वैसे ही ए सी सस्ते हो जाएंगे, किस्तों में ले लेंगे, आजकल क्या नहीं मिलता किस्तों पर!' आयडिया बुरा नहीं था, लेकिन एकदम तो हां नहीं कर सकते ना, वरना आगे के लिए खतरे पैदा हो सकते हैं।

'इतनी जल्दी भी ठीक नहीं, यदि सरकार ने नियम बनाया है तो तोड़ने वाले भी तो काम में लगे होंगे। क्या बड़े-बड़े बंगले वाले, हाथ में पंखा लिए बरामदे में बैठे नजर आएंगे? ये मंत्री, अफसर, ठेकेदार, व्यापारी और गुंडे-माफिया, क्या ये हाथ पर हाथ धरे रहेंगे, कोई जुगत नहीं लगाएंगे? देखो अभी हमारे विधायकों को बंगले और कार के लिए कितनी आसान शर्तों पर लोन मिल रहा है, क्या ये लोग मांग नहीं करेंगे कि हमारे ए सी को छूट दी जाए या हम पर यह नियम लागू ना हो, क्योंकि हम जनसेवक हैं! फिर ऐसा भी तो नहीं है कि छापा मारने वाले फौरन भांप लेंगे कि ए सी किस सन् या संवत का बना है। अभी ये लोग बिजली तो दिन में चालीस बार बंद-चालू करते हैं, हर घर में ए सी खोजने तो जाएंगे नहीं। फिर ये सभी कोई इमानदारी की कसम खा कर तो निकलेंगे नहीं कि कुछ ले-दे कर मामला रफा-दफा नहीं कर दें।' सरकारी काम के मेरे अनुभव, सुने हुए यहां काम आ रहे थे।

'लेकिन यदि सभी ऐसा करने लगे तो हम क्या करेंगे?' रुआंसी हो गई।

'देखो तुम चिंता मत करो, ऐसा होगा तो हम दो-दो ए सी लगवा लेंगे एक-एक कमरे में...!' मैंने कह तो दिया, लेकिन खुद समझ नहीं पाया कि ऐसा करने से क्या गरमी कम लगेगी। 20 और 20 तो चालीस हो जाते हैं, दस कैसे हो जाएंगे। पत्नी भी समझने में लगी है और मैं खुश हूं कि कम से कम आज तो मुसीबत टल गई, जैसा कि मनोहर लालजी सोच रहे होंगे कि पौधे लगाने, पेड़ बचाने, नदियां साफ करने और पहाड़ खड़े रखने में जो मेहनत लगती ,अकेले ए सी के नये टेम्प्रेचर ने खत्म कर दी है।

स्त्री आज़ादी के बदलते मापदंड

और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

वैसे तो स्त्री पुरूषों दोनों को हमेशा कई बार आपराधिक गतिविधियों में लिप्त पाया गया है। परंतु स्त्री की आज़ादी के मायने वही हैं जो पुरूष आज़ादी के हैं। आप सोचेंगे हाल ही में स्त्रियों द्वारा किये गये आपराधिक कांड होने के बावजूद मैं स्त्रियों का पक्ष ले रही हूँ मैं 10 गुना पुरूष अपराध जिसमें मासूम बच्चियों से बलात्कार के बाद हत्या के केस सामने आ रहे हैं। पर स्त्रियों के द्वारा किये गये चंद अपराध फ्लैश लाइट की तरह चमक रहे हैं, मैं मानती हूँ अपराध किसी ने भी किये हो अक्षम्य है। चलिये हम स्वयं भी देखें चूक कहा से हो रही है

(1) परिवार व समाज की भूमिका: केवल एक स्त्री को गाली देकर हम अपराध नहीं रोक सकते। परिवार में एक बालिग स्त्री है तो बिना उसकी सहमति के विवाह उस पे ना थोपा जाये। विवाह की आज़ादी स्त्री पुरूष को मिलनी ही चाहिये जीवन उनको साथ गुज़ारना है इस आज़ादी पे रोक लगाना, मन में कुंठा, क्रोध, बदले की भावना को जन्म दे और परिणाम हम देख ही रहे हैं हत्या नहीं तो दुःखद वैवाहिक जीवन, बच्चों का बिखरता भविष्य।

(2) दूसरी भूमिका है सोशल मीडिया व सिनेमा, प्रिंट मीडिया कीः कोई बड़ी या छोटी बात हो उसको अगर हम लगातार बार बार सुनें, देखें, पढ़ें तो समझिये उसमें आप की उत्सुकता नकारात्मक समाचारों पर ही ज़्यादा फोकस होगी। मानती हूँ अपराध हो रहे है और मीडिया का उद्देश्य जनता को अवेयर करना है पर सिर्फ टी.आर.पी. के लिये एक ही दृश्य को पेश करना (ऐसा नहीं कि बच्चों की उन पर नज़र नहीं पड़ती) मेरी कजिन सुबह थकी सी मेरे पास आई पूछने पर बताया रात भर सोई नहीं। उसने बिंज वॉचिग की (लगातार टी.वी. मोबाइल घंटो देखना) और चूंकि उसने सोनम हत्याकांड पर देखना शुरू किया तो एल्गोरिदम ने सैट कर दिया और लगातार एक के बाद एक उसी विषय वीडियों आते गये और उत्सुकतावश वो देखती रही तीन बजे तक असका मष्तिष्क थक गया पर मन नहीं भरा या तो सरकार द्वारा बुरी दुर्घटनाओं के लिये समय सीमा या एक समाचार को कितनी बार दिखाये जाये तय किया जाये

पुलिस की भूमिका- स्त्री, पुरूष, परिवार वालो की पुकार पुलिस को तुरंत सुननी चाहिये। जहाँ तक हो सके तो पत्रकारों मीडिया को उतनी ही जानकारी दी जाये जितना समाज व जनता को जानना आवश्यक हो ताकि अफ़वाह ना फैलने पाये

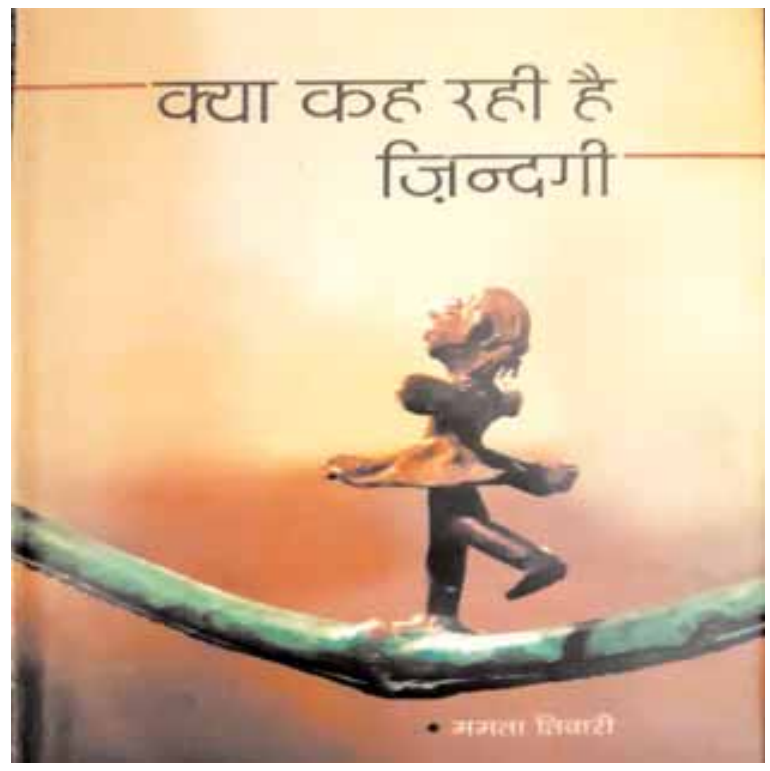

सरकार की भूमिका-

सरकार अपनी पावर से बड़े लोगों को बचाने की कोशिश ना करें बल्कि व्यक्तिगत रूप से सब चीज़ों पर नज़र रखी जाये ताकि पीड़ित परिवार किसी भी तरह असुरक्षित ना महसूस कर सके सरकार को घरेलू स्त्रियों या सभी के लिये मानसिक सलाहकार कक्षायें चलाई जाये जहाँ वह निःसंकोच अपनी बातें कर सके विदेशों में अपराध के बाद भी थेरेपी सेशन चलते है पुरूषों को, माँ, बाप, सास ससुर को विवाह से पहले भ्वू जव इमींअम ूपजी दमू बवउमते अब चाहे दूल्हा हो या दुल्हन की कक्षायें चलाई जायें, अब मानसिक खेल ज़्यादा हो रहा है।

न्याय की भूमिका- कुछ समय से समाज में बडे महत्वपूर्ण बदलाव हो रहे थे सबसे बड़े बदलाव न्यायालयों के ज़रिये आ रहे थे अवैध संबंधों को कानूनी अनुमति मिलना 2018 में सुप्रीम कोर्ट ने धारा 497 में इसको असंवैधानिक ठहरा दिया इस धारा के अंतर्गत पति या पत्नी को अवैध संबंधों को गलत माना जाता जो खत्म कर दिया गया। पंजाब हरियाणा कोर्ट ने कहा कि कोई महिला अपने पति की हत्या कर दे तो भी वो उसकी पेंशन की हकदार होगी। दिल्ली पटना समेत उच्च न्यायालय ने आदेश दिया कि पत्नी कभी कभी अवैध संबंध बनाये तो पति उसे तलाक नहीं दे सकता। पत्नी को गुजारा भत्ता देना होगा म.प्र. न्यायालय ने एकदम आगे बढ़ कहा कि यदि कोई महिला पति के साथ क्रूरता या अवैध संबंध बनाये पति को उसे गुजारा भत्ता देना होगा। हरियाणा हाईकोर्ट ने दिव्यांग पति को आदेश दिया पत्नी को उसे गुजारा भत्ता देना होगा जबकि पत्नी उसे बुरी तरह मारा करती थी। बांबे हाइकोर्ट ने आदेश दिया पति चाहे दिव्यांग भिखारी, गरीब क्यों ना हो उसे गुज़ारा भत्ता देना होगा म.प्र. हाइकोर्ट ने लिव इन रिलेशनशिप में लड़के को गुजारा भत्ता देना ज़रूरी कर दिया। सुप्रीम कोर्ट ने आदेश दिया कि पत्नी अगर किसी दूसरे मर्द से बच्चा पैदा करती है तो भी पति उसका डी.एन.ए. टेस्ट नहीं करा सकता लेकिन पति को उसका पालन पोषण करना होगा और उसे संपत्ति मे अधिकार भी देना होगा। इन निर्णयों ने महिलाओं को शादी शुदा होते हुये भी अवैध संबंध बनाने की छूट दे दी स्त्रियों ने इसे ब्लैकमेल का हथियार बना लिया। मीडिया फिल्मों ने इसे बढावा दिया। इस तरह अपराध मुक्त हो गई फेमिनिज्म की आड़ में न्यायालय को पुरूषों के प्रति एकतरफा न्याय ना करने के लिये आवाज उठाये। 498 । जो घरेलू हिंसा के लिये कों मदकमत दमंजतंस बनाये।

स्त्री की स्वयं की भूमिका: स्त्री को हमारे समाज ने मापदंड तय कर दिये है उसे लज्जाशील, संस्कारवान, पूजा पाठ, घर चलाने वाली, जवाब ना देने वाली, पति पर निर्भर रहने वाली, निर्णय ना लेने वाली अपना जीवन साथी खुद ना चुनने वाली वगैरह वगैरह बंदिशें हैं। ऐसा करके हम उस के दिमाग में खलल पैदा करते हैं वो अपने भावनायें दबाती है कुंठित होती जाती है। समय समय पर परिवार के सभी सदस्यों को एक साथ बैठ बातें शेअर करनी चाहिये कितनी भी लड़ाई हो बातें करना बंद ना करें।

स्त्री शिक्षा सर्वोपरि है पर अब तो अपनी शिक्षा का उपयोग आपराधिक प्लान में लैपटॉप मोबाइल बैंक में लगाने लगी है समय समय पर लड़की को घुमाने ले जाये उससे उसके दिल की बातें पूछे केवल लड़को को ही पॉकेट मनी ना दे लड़की को अधिक सुरक्षा दे लेकिन उतनी ही जिसका दुरूपयोग ना हो जैसा सोनम में किया स्त्री को बचपन से पैसों का मैनेजमेंट सिखाया जाये ताकि वो गलत काम की प्लानिंग में पैसे का दुरूपयोग न करें मेरे ख्याल से अगर उसके पास पैसा ना होता तो इतना बड़ा कदम उठाने की हिम्मत ना होती। पत्नी को बार बार अपमानित करना, दैहिक शोषण, मार पिटाई जैसी चीज़े करना उसमें एक सीमा तक ही सहनशीलता रहने देता है फिर वो विद्रोही हो जाती है। अब बात स्वयं स्त्रियों की है उन्हें गलत बात पर हाँ नहीं करनी चाहिये अगर क्रोध आये तो कुछ समय शांत होकर अलग बैठ जाना चाहिये या जो बकवास लिखना हो कागज पर लिख कर फाड़ देना चाहिये कई बार समस्यायें बहुत छोटी होती हैं तब आप सोचेंगी हत्या या आत्महत्या ? पर उसके बाद के परिणाम भी सोचना चाहिये। जिन कारणों से, जिस सुख को पाने के लिये स्त्रियों ने हत्या की वोसुख उन्हें मिला क्या ? यदि आप अपने घर में मानसिक रूप से अति विद्रोही लड़की, स्त्री देखें तो स्वयं काउंसिलिंग को ले जायें। आर्थिक रूप से स्वतंत्रता भी स्त्री को अहंकारी बना रही है। आजकल लंबे समय तक इक रिश्ता निभाना भारी पड़ता जा रहा है ऐसे रिश्ते अगर आप ढो रहे हैं और जहर आप की जबान से शरीर तक फैल रहा है तो पहले दूरी बढ़ाये और बजाय हत्या और आत्महत्या करने के अलग हो जाये, बस स्त्रियाँ कोशिश करें बच्चों को इससे अलग रखें ताकि नये अपराधी ना पैदा हो। महिलाओं की नैतिकता, संस्कार इतनी गिर गई कि अपने प्रेमी के लिये पति और बच्चों की हत्या करते उन्हें डर शर्मिंदगी नहीं लगती हमें आवाज उठानी होगी लिखना होगा सतत प्रयास करते रहना होगा। क्योंकि मरने वाले आप ही के पिता, भाई, रिश्तेदार, दोस्त हैं तो एकतरफा व्यवहार क्यों फिर भी हमारे चूंकि स्त्री को परिवार बच्चे समाज सभी को संभालना है तो उसे धैर्य रखना होगा, मन की बातें सब से शेयर करना होगा और उसके लिये हम सबको उसको आर्थिक, शारीरिक, मानसिक रूप से सहयोग करना होगा क्योंकि कानून राजनीतिज्ञों मीडिया ने स्त्री को पीड़ित बना दिया है घर के निर्णयों में दोनों का पक्ष भी सुनना होगा और पूछना होगा उससे सुबह सवेरे और क्या कह रही है ज़िंदगी ?

पेड़ है कि मानता नहीं...

रतलाम में महू रोड़ पर ओवर ब्रीज है। ओवर ब्रीज के नीचे एक गुलमोहर का पेड़ है। पेड़ हर साल सघन होकर ओवर ब्रीज को पार करने का प्रयास करता है। यातायात की कठिनाई देख समय समय पर उसकी शाखाएं काट दी जाती है, मगर यह है कि मानता नहीं। हर बार सड़क पर करने की कोशिश करता है। डर लगता है, फूलों से लदा यह पेड़ न जाने कब खटकने लगे और इसके पर कतर दिए जाएं। तमाम आशंकाओं के बीच पेड़ हर साल की तरह दुगनी ताकत से छा गया है।

यह सलामत रहे, ये दुआ है मेरी।

फोटो और विवरण: बंसीलाल परमार

एक अकेला इस शहर में....!

❐ यूके से

प्रज्ञा मिश्रा

ब्रि **फिल्म 'परफेक्ट डेज'** का किरदार हिरायामा ऐसी बढ़िया जिंदगी जी रहा है, जहां भागमभाग नहीं है, किताबों, संगीत और खुद के लिए भरपूर समय है, काम करने के साथ बगीचे में शांति से बैठने, निहारने का वक्त है। पब्लिक टॉयलेट साफ करता है मुस्कराहट और दिल लगाकर। जब बहन की बेटी रहने आ जाती है तो उसे समझ ही नहीं आता कि आखिर किसी और के साथ जिंदगी को कैसे बांटा जाए!

हिरायामा की जिंदगी ऐसी है, जो शांति को न सिर्फ मजबूत सहारा देती है बल्कि आम जरूरतों की भी बात करती है। ऐसा नहीं है कि हिरायामा मिलता-जुलता नहीं है, पर एकांत से लगाव है। हिरायामा तो फिल्म का किरदार है, लेकिन ऐसी जिंदगी की ख्वाहिश तो हर इंसान चाहता है, जहां सुकून मिले। जब एकांत या नई भाषा में 'मी टाइम' की ख्वाहिश बढ़ती है तो स्कूल में पढ़ी लाइन 'मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है' पर सवाल लग जाता है।

अकेलेपन में कमी का एहसास है, लेकिन शांति-सुकून है, जिसकी चाहत है। यही वजह है कि खुशी के फायदों पर ढेरों किताबें आई हैं। एक समय था कि जब कोई अकेला कहीं घूम रहा होता था तो लोग दया कर देते थे कि बेचारा या बेचारी अकेली है, लेकिन अब ऐसे अकेले या जो सुकून को जिंदगी की गाड़ी का इंजन बना कर जी रहे हैं, जिंदगी के जानकार बन चुके हैं, उन पर किताबें लिखी जा रही हैं। किस

भरोसे के साथ न सिर्फ दुनिया घूम सकते हैं, बल्कि रेस्टारेंट में जा सकते हैं, फिल्म भी देख सकते हैं और जिंदगी के बड़े-छोटे पलों में शामिल हो सकते हैं। अकसर, अकेले को कमी की तरह देखा जाता है, लेकिन कोई यह बात नहीं करना चाहता कि आखिर शादी का आविष्कार कहां से हुआ, किसने तरीका ढूंढा कि दो लोग बची जिंदगी साथ गुजारेंगे। हो सकता है बिजनेस को बढ़ावा देने के लिए किया हो और लोग इन्वेस्टमेंट और अच्छे रिटर्न की उम्मीद में शादी करने लगे।

इस एकांत में समय का बेहतरीन इस्तेमाल किया जा सकता है। रचनात्मक और शौक के काम, एकांत में खिलते हैं। टहलना या दौड़ना, कैफे में निहारना, संग्रहालय जाना आदि। जानकारों के मुताबिक 'इंसानों को समाज चाहिए, लेकिन साथ ही उन्हें अकेलापन भी चाहिए। खुशी और भलाई, जो सबके लिए अलग-अलग है, उसका सही तालमेल तलाशना है। यह भी हर किसी के लिए अलग-अलग होगा और तब ही काम करेगा।